# दो घिनौने
# मुफ्तखोर, कामचोर

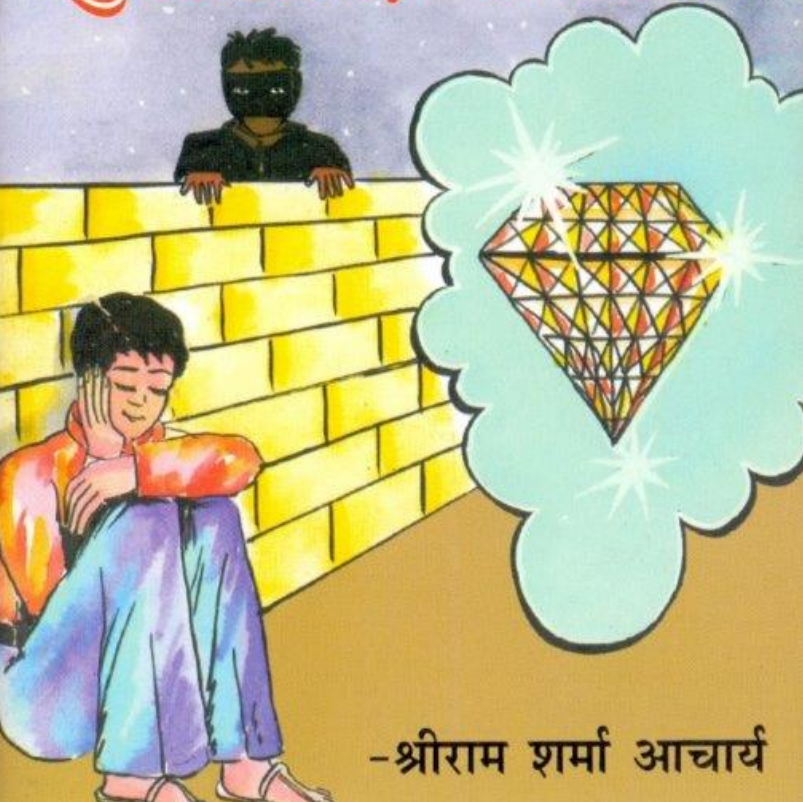

-श्रीराम शर्मा आचार्य

# दो घिनौने : मुफ्तखोर, कामचोर



लेखक :
**पं. श्रीराम शर्मा आचार्य**

प्रकाशक :
**युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट**
**गायत्री तपोभूमि, मथुरा**
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

**पुनरावृत्ति सन् २०११** **मूल्य : ९.०० रुपये**

प्रकाशक :
**युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट**
**गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३**

---

उपार्जन कठोर परिश्रम और न्याय नीति के आधार पर होना चाहिए। प्रकृति परमेश्वरी को दो प्रवृत्तियाँ कतई नापसंद हैं— (१) मुफ्तखोरी (२) कामचोरी। औसत मनुष्य की तरह श्रमपूर्वक उपार्जन एवं संयमपूर्वक निर्वाह करके जो शेष बचता है, उसे परमार्थ प्रयोजन में लगाते रहना चाहिए। औचित्य इसी में है। अनीति से उपार्जन, लोभवश संग्रह, विवेक दृष्टि से हेय ही कहा जा सकता है। इसी प्रकार बिना श्रम उपार्जित संपत्ति के उपयोग की ललक भी नीतियुक्त नहीं है।

---

मुद्रक :
**युग निर्माण योजना प्रेस,**
**गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३**

# परिश्रम के बिना धनाकाँक्षा प्रकृति को पसंद नहीं

समुद्र अन्वेषी अंग्रेज कप्तान कुछ वैज्ञानिकों का एक दल लेकर सन् १७७८ में लंबी समुद्र यात्रा पर निकला था। इसमें उसने इंग्लैंड से लेकर आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तक के लंबे क्षेत्र के प्रामाणिक नक्शे तैयार किए थे, साथ ही उस बहुमूल्य संपदा का पता लगाने का प्रयत्न किया जो समय-समय पर डूबे हुए जहाजों के कारण समुद्र तल में डूबी पड़ी है। एक तूफान में फंस जाने के कारण सन् १७७० में ग्रेट वैरियर रीफ के समीप उसने अपने जहांज पर लदी छः तोपें भी पानी में फेंक दी थीं। कप्तान कुक के द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदनों में से कुछ गुम हो गए हैं अस्तु उसके कामों का फिर से सर्वे करना पड़ रहा है। उसने जिस स्थान पर अपनी तोपें फेंकीं थीं उसी के नजदीक बहुत-सी संपत्ति समुद्र तल में होने का संकेत था अस्तु उस स्थान को ढूँढ़ने का प्रयास नए सिरे से करना पड़ा।

पिछले दो सौ वर्षों में एक के बाद एक खोजी दल दस बार उस क्षेत्र में गए, पर उन तोपों के डुबोए जाने के स्थान का सही पता न लगा सके। अब फिलाडेल्फिया की प्रकृति विज्ञान एकेडेमी के एक खोजी दल ने उस स्थान को ढूँढ़ निकाला है और छहों तोपें सुरक्षित रूप से प्राप्त कर ली गई हैं। अब अगला कदम उन स्थानों का पता लगाने का है जहाँ बड़ी धनराशि मिलने की संभावना है।

इस संदर्भ में मिंस्क गवर्नर की खोज रिपोर्ट में नए तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है। कुछ समय पूर्व नोवोग्रुदोक के एक सैनिक ने अपने बड़े अधिकारी को सूचना दी थी कि ऐलेग्जानु रोमानोविच नामक एक ग्रामीण के पास प्राचीन वस्तुओं का बहुमूल्य संग्रह है। छापा मारने पर उसके पास सोने की कीमती छड़ें, जंजीरें और रत्नजटित अँगूठियाँ पाई गईं। ये वस्तुतः नैपोलियन द्वारा जमा किए खजाने की ही एक अंश थीं। शेष खजाना कहाँ गया, इसकी पूछताछ उसी किसान से की गई तो पता चला कि उसके पूर्वजों के समय हुए बँटवारे का आधा भाग पड़ौस के गाँव में रहने वाले मुखा नामक व्यक्ति के बाप-दादों को मिला था।

शायद उसके पास जमा हो। मुखा ने बताया कि महायुद्ध के समय जब गाँव खाली करना पड़ा था तो वह उन चीजों को एक लोहे के संदूक में बंद करके जमीन में गाढ़ गया था, पर जब लड़ाई बंद होने पर वापस लौटा, तब किसी ने उन संदूकों को ही गायब कर दिया था उसका अनुमान है कि-इस धन की जानकारी केवल पैट्रिक को थी और इसे गायब करने में उसी का हाथ हो सकता है।

पैट्रिक के साथ पुलिस ने कड़ाई की तो उसने बात स्वीकार करली। साथ ही यह भी कहा उसे सुरक्षित रखने में झंझट की बात सोचकर एक पुलिस अफसर को सस्ते मूल्य में बेच दिया था और नकदी ले ली थी। वह पुलिस अफसर कहाँ है ? यह ढूँढ़ा गया तो पता चला कि वह रूस छोड़कर वारसा में जा बसा है। अब वह ढूँढ़-खोज यहीं रुकी पड़ी है आगे का पता नहीं चल रहा है। यदि वह सारी दौलत मिल सके तो रूसी सरकार के दरिद्र पार हो सकते हैं।

एक तीसरा खजाना और भी इन दिनों चर्चा का विषय बना हुआ है। स्पेन का शासन अठारहवीं सदी के प्रथम चरण में अमरीका के एक बड़े भाग पर था। उन उपनिवेषों से शोषित संपत्ति निरंतर स्पेन भेजी जाती रही थी। २४ जुलाई १७१५ को पंद्रह बड़े जहाज अरबों रुपयों की संपत्ति लेकर हवाना बंदरगाह से स्पेन के लिए रवाना हुए थे। उनमें ११६ पेटियाँ सोने-चांदी तथा रत्नों और मोतियों से भरी हुई थीं। एक सप्ताह की यात्रा ही वे कर पाए होंगे कि भयानक समुद्री तूफान ने उन्हें धर-दबोचा और प्रायः सभी जहाज गहरे पानी में डूब गए। हजारों यात्रियों और नाविकों के अतिरिक्त वह संपदा भी समुद्र के पेट में समा गई। मुट्ठी भर मल्लाह ही किसी प्रकार किनारे लगे-उन्हीं से दुर्घटना का विवरण विदित हो सका।

स्पेन के गोताखोर उस संपत्ति को निकालने का प्रयत्न करते रहे। एक बार कुछ कहने लायक धन निकाला भी गया, पर उसे हमला करके समुद्री डाकू लूटकर ले गए। तब से खोजियों का उत्साह ढीला पड़ गया, फिर भी लहरों के साथ बहकर आने वाले वे सिक्के जो तट की मिट्टी में सने हुए मिल जाते हैं अभी भी उस लालच को सजीव रखे रहते हैं और प्रयत्नों को मरमर कर जीवित होने की प्रेरणा देते रहते हैं।

वैगनर और कैल्सो नामक दो साहसी गोताखोरों ने आठ व्यक्तियों की एक व्यवसायिक संस्था बनाकर नए सिरे से प्रयत्न किए हैं। फ्लोरिडा

राज्य की सरकार ने अपने क्षेत्र में दबे पड़े इस खजाने को निकालने का अधिकार इस कंपनी को इस शर्त पर दे दिया है कि उपलब्ध धन का चौथाई भाग सरकार को मिलेगा। सन् १९६७ में प्रथम बार इस स्थान से एक बड़ी राशि निकाली गई उसमें ६० हजार सोने के सिक्के थे। तब से अब तक और भी बहुत कुछ निकाला गया है, इसमें प्रायः १०० किलो वजन की ४२ चांदी की सिल्लियाँ और छोटी ६ किलो वजन की १० सिल्लियाँ मुख्य हैं। जो आभूषण तथा उपकरण निकलते हैं, उन्हें संग्रहालयों द्वारा अच्छे मूल्य पर खरीद लिया जाता है। जो इन वर्षों में ढूँढ़ निकाला गया है। उसकी तुलना में जो दबा पड़ा है, जो ढूँढ़ा जाना है वह सैकड़ों गुना अधिक है।

एक चौथी घटना और है—उन दिनों अमरीका नया-नया ही बसा था। लगभग सारे ही योरोपियन देश वहाँ से दौलत लूट जाने के लिए धमा-चौकड़ी मचाए हुए थे। उन्हीं में से एक दुःसाहसी का नाम था जॉन एवान मार्टिन। उसने सुन रखा था कि ब्राजील के सघन जंगलों में ढेरों सोने की खदानें बिखरी पड़ी हैं और लोग उन्हें खोदकर अनाप-शनाप दौलत बटोर रहे हैं। वह दुस्साहसी युवक भी यह लोभ संवरण न कर सका और उधर ही चल पड़ा। मार्टिन पिछले दस वर्षों से समुद्री सेना में काम कर चुका था, उसने बहुत देश और तरह-तरह के अनुभव बटोरे थे। जिंदगी मौत की लड़ाई से वह कितनी ही बार जूझा था। उससे वह डरा नहीं वरन् वह दूना साहसी हो गया। ब्राजील से सोना बटोरने का साहस उसने अपने संग्रहीत जोखिम उठाने की आदत के अनुसार ही किया था।

गोरे लोग ब्राजील के दक्षिणी इलाके में ही खोज करने जाते थे। उत्तरी इलाके में जाने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। यद्यपि सोना उधर ही अधिक था। कारण यह था कि उत्तरी इलाके में जो आदिवासी बसे हुए थे, वे बहुत ही खूँख्वार थे। उधर से गुजरने वालों को पग-पग पर उनके आक्रमण का सामना करना पड़ता था और अधिकतर मौत के शिकार बन जाते थे। इसलिए उस क्षेत्र में कोई विरले ही जा पाते थे। मार्टिन ने उसी इलाके में जाने का निश्चय किया। आदिवासियों की आदतों और उनसे बचने की तरकीबों का अध्ययन करने के बाद उसने यही फैसला किया कि वह उनसे आँख मिचौनी खेलता हुआ अपना प्रयोजन पूरा करेगा। सो वह थोड़े-से कुली साथ लेकर उत्तरी ब्राजील के सघन वनों में घुस ही पड़ा।

कई हफ्ते इधर-उधर टक्करें खाते-फिरने के बाद आखिर उसने वह क्षेत्र ढूँढ़ ही लिया, जहाँ सोने की छोटी-छोटी खदानें बिखरी पड़ी थीं। अपने छोटे-से साधनों से वह सोना समेटने लगा और दो महीने के भीतर ही उसने प्रायः साठ पौंड सोना इकट्ठा कर लिया। अधिक इकट्ठा करते जाने की अपेक्षा उसने यह अच्छा समझा कि जो कमाया है, उसे कहीं सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दें और तब आगे की खोज करें।

पीठ पर साठ पौंड सोने के भारी थैले लादकर वह धीरे-धीरे चल पड़ा। रास्ते में यूरटोरी कोका के एक छोटे-से होटल में उसे सुस्ताना पड़ा। इस होटल का मालिक ग्लवेज जाना-माना बदमाश था। दिखाने को तो वह कई जगह होटल, शराबखाने और जुआघर चलाता था, पर उसका असली काम सोने की खानें कुरेदने वालों का पता लगाना और उन पर हमला करके मौत के घाट उतार देना था। इस प्रकार उसने करोड़ों डालर की कमाई की थी और सैकड़ों आदमी इस तरह खतम किए थे कि उनकी लाश का पता भी न चले और लोग यह तक पता न लगा सके कि आखिर उनका हुआ क्या ?

मार्टिन की पीठ पर लदे हुए सोने को उसने भांप लिया और अपनी पिस्तौल लेकर उसका पीछा करने लगा। ग्लवेज के बारे में मार्टिन ने सुन रखा था अब उसे अपनी मौत की जीती जागती छाया अब तब दबोचती हुई दिखाई देने लगी। अब क्या हो सकता है ? इस पर उसने बारीकी से सोचा और यह निर्णय लिया कि वह सामने वाली कातर यानी कबीले के लोगों के गाँव में घुस पड़ेगा और उन्हें चकमा देकर किसी प्रकार अपनी जान बचावेगा उसकी योजना फिट बैठी।

शिकार हाथ से जाता देखकर ग्लवेज ने गोली चलाई। गोली की आवाज सुनकर कवाइली लोगों का पूरा गाँव अपने हथियार लेकर आ डटा और चारों ओर से घेरकर उसका सिर काट लिया। इसी बीच अवसर पाकर मार्टिन भाग खड़ा हुआ। पर भागने के लिए आवश्यक था कि वह वजन हलका करे और सोने का मोह छोड़े निदान वह ऐसी झाड़ी में सोना छिपाकर अपने डेरे पर चल पड़ा। जिसे ढूँढ़ सकना फिर कभी उसके लिए संभव नहीं हुआ। यद्यपि वह कई बार बड़ी तैयारी के साथ उस स्थान तक पहुँचने का प्रयत्न करता रहा।

इसके बाद भी मार्टिन ने कई प्रयत्न किए। कई बार कुछ पाया भी पर वह ऐसे ही किसी न किसी तरह हाथ से निकल जाता रहा। निढाल

होकर वह अमरीका छोड़कर आस्ट्रेलिया जा बसा और वहीं किसी तरह दिन काटने लगा।

उपरोक्त चार खजानों की चर्चा पढ़कर हममें से कोई भी यह सोच सकता है कि ऐसा ही कोई दबा-गढ़ा खजाना हमारे हाथ लग जाता तो कितना अच्छा होता ? सचमुच इस धरती के गर्भ में दबे हुए ऐसे खजानों की संख्या हजारों-लाखों की संख्या में होगी जिन्हें मनुष्य ने किसी प्रकार उपार्जित तो किया, पर वह उनका न तो उपयोग कर सका और न उपभोग। उसने उसे फिर कभी के लिए संग्रह किया और जरूरतमंदों की नजर से छिपाकर कहीं दबा- छिपाकर रख दिया। जिस समय के लिए उसे संग्रह किया गया था, वह आया ही नहीं और वह सारी दौड़-धूप जमीन के नीचे दबी रह गई। अब वह किसी के काम नहीं आ रही है। इससे पूर्व वह कम से कम किसी के काम तो आ रही थी। अब उसका काम एक ही है कि इस दिशा में सोचने वाले हर एक व्यक्ति के मन में मुफ्तखोरी का लालच उत्पन्न करे।

❐ ❐

# पल्ले पश्चात्ताप ही पड़ा

पाइलीन बीवर के जीवन का वह सबसे अधिक रोमांचक दिन था जब उसने किसी पहाड़ को स्वर्ण जैसी चमकती हुई धातु उगलते देखा। खेमे पहाड़ी से कुछ ही दूर पर थे, जहाँ बीवर के अन्य सब सहकर्मी प्रगाढ़ निद्रा में सो रहे थे। बीवर अकेले ही उठकर गया और धातु का एक टुकड़ा हाथ में लेकर देखा, विस्मित रह गया शत-प्रतिशत शुद्ध सोना था वह। जल्दी-जल्दी में उसने काफी टुकड़े इकट्ठे किए और पहाड़ की ओर चलने के लिए खड़ा हुआ तभी उसके पैरों के नीचे की जमीन धँसती हुई जान पड़ी। उसने देखा खेमे का कहीं पता भी नहीं है, वह स्थान जली हुई राख की ढेरी में परिवर्तित जैसा लग रहा है।

बीने हुए सोने के ढेर सारे टुकड़े वहीं बिखर गए। भय से शरीर काँप गया। बात क्या है यह समझने के लिए फिर दृष्टि पीछे घुमाई तो एक विलक्षण दृश्य दिखाई दिया। पर्वत की चोटी पर से हजारों छायाएँ उतर रही थीं और भयंकर आवाज के साथ उसी की ओर सेना के सिपाहियों की तरह दौड़ी आ रही थीं। बीवर चिल्लाया और अचेत बनकर वहीं, ढेर हो गया। चेतना वापस लौटी तब वहाँ कुछ नहीं था। अब उसे भागते ही बना बीवर ने फिर कभी उधर जाने की हिम्मत नहीं की।

१६ वर्ष बाद ठीक वैसी ही घटना मैक्सिको के युवक पैरेलटा के साथ घटी उसके भी सभी साथी इस अभियान में मारे गए थे वह तो उसका भाग्य था जो किसी तरह वह स्वयं शैतानी शिकंजे से बचकर निकल सका।

पाइलीन बीवर और डान पैरेलटा दोनों ने अपने-अपने संस्मरण छपाये तब लोगों को सोना बरसाने वाले इस अद्‌भुत पहाड़ का पता चला, जिसके बारे में यह कहा जाता है कि आज तक वहाँ सोने के लालच में जो गया जीवित नहीं लौट पाया जो जिंदा लौटा भी वह सोने का एक कण भी नहीं ला पाया है, हाँ वह भय अवश्य लाया जिसके बाद में फिर उसने उधर जाने की कभी भी हिम्मत नहीं की। यह पहाड़ अमेरिका के एरिजोना प्रांत में स्थित है और आज तक यह प्रकृति के

एक विलक्षण आश्चर्य के रूप में विद्यमान है। एरिजोना रूस के साइबेरिया प्रांत जैसा क्षेत्र है जिस तरह साइबेरिया अत्यंत विकिरण वाला क्षेत्र है वैसे ही यह भी विचित्र आश्चर्यों से परिपूर्ण है। एक लंबा और ६०० फीट गहराई वाला बहुत बड़ा क्रेटर जो किसी उल्का पिंड के आघात का बना बताया जाता है यहीं पर है। इससे बड़ा ६ मील लंबा और ७०० मीटर गहरा क्रेटर कनाडा में है और कहीं इतना बड़ा क्रेटर नहीं है।

डान पैरेलटा की यात्रा के २ वर्ष बाद सोने के लालच में दुनियाँ के सैकड़ों लोगों ने एरिजोन की यात्रा की—इनमें अमरीका के ही युवक सबसे अधिक संख्या में गए और अपने प्राणों की बलि चढ़ाकर शांत हो गए।

एक बार अमरीका के प्रसिद्ध डाक्टर लबरेन रोअली भी उधर पहुँच गए। लालच चाहे जिसे पागल कर सकता है। लबरेन किसी प्रकार पहाड़ी के पास तक पहुँचने में सफल हो गए पर घूर्णन जैसी एक भयंकर आवाज और सैकड़ों मायाविनी छायाओं ने उनको घेर लिया। थोड़ी देर में उनका शरीर मृत होकर पड़ा था। इस मृत्यु ने अमरीका में खलबली मचा दी। डाक्टरी जाँच से पता चला कि रोअली का रक्त चूस लिया गया था पर कैसे ? यह पता किसी भी तरह नहीं चल पाया ? तब से इस पहाड़ का एक नाम "खूनी पहाड़" ही पड़ गया।

इस पहाड़ के बारे में विचित्रताएँ हैं वह यह कि यह निश्चित समय पर ही सोना बरसाता है, उसी प्रकार वहाँ पर जितनी भी हत्याएँ अब तक हुई वह दिन के ठीक ४ बजे हुई। ४ बजे ही इस चोटी की परछाई पृथ्वी को छूती है। मरने वालों के शरीरों की एफ. बी. आई. द्वारा जाँच की गई कि यहाँ आकर जिस किसी की भी हत्या हुई उसकी रक्त चूस लेने के कारण हुई जबकि किसी भी शव में घाव या चोट का कोई निशान नहीं मिलता। आस्ट्रेलिया के युवक फैज हैरर, होमर तथा होनोलूलु के कई व्यापारियों की हत्या इसी पहाड़ के किन्हीं तांत्रिक रहस्यों द्वारा हुई। सबसे रोमांचक प्रसंग जर्मनी के इंजीनियर वाल्ज का है वाल्ज इस पहाड़ के रहस्यों का पता भले ही न लगा पाया हो पर उसकी खोज में संघर्ष तथा सोना प्राप्ति का सबसे अधिक आनंद उसी ने पाया।

वाल्ज इंजीनियर बनकर एरिजोना की खानों में काम कर रहा था तभी उसके मन में सोना बरसाने वाले इस पहाड़ के रहस्य जानने की तीव्र जिज्ञासा जागृत हुई। वाल्ज का अनुमान था कि पहाड़ी का रहस्य अपैची कबीले के प्रमुख तांत्रिकों के हाथ में ही हो सकता है क्योंकि वही लोग उसके आस-पास बसे हैं। अपैची बड़े खूँख्वार होते हैं। श्वेतों

से उन्हें बड़ी घृणा होती है। कई बार अमरीकियों ने उनका विधिवत् संहार किया है जिससे उनके मन में गोरों के प्रति और तीव्र घृणा के भाव हैं। १८७२ का "अपैची लीप" विश्व प्रसिद्ध है जिसमें जानवाकर ने अपैचियों को बुरी तरह काटा था। इसके बाद अपैचियों के सरदार गैरोनियों ने गोरों पर गोरिल्ला धावे किए उसे नष्ट करने के लिए १८८६ में जनरल नेल्सन ने युद्ध किया था और उन्हें पीछे धकेल दिया था, तब से यह तांत्रिक इसी पहाड़ पर शरण लिए हुए है, जो भी वहाँ गया आज तक वापस नहीं लौट सका।

वाल्ज ने चतुराई से काम लिया। उसने एक अपैची युवती केन. टी. से प्रेम कर लिया और उसी से शादी भी कर ली। आदिवासियों का सद्भाव प्राप्त करने के लिए यह एक बड़ी बात थी जिससे वाल्ज को पहाड़ तक आने-जाने का रास्ता खुल गया। उसने केन. टी. से भी रहस्य जानने के प्रयास किए पर उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि क़ेन. टी. क्या तमाम आदिवासियों में कुछ ही तांत्रिक ऐसे हैं जो इस रहस्य को जानते हैं सब नहीं।

उसने पहले तो केन. टी. के सहयोग से काफी सोना इकट्ठा किया फिर जैकब विजनर नामक युवक से मित्रता करके इस पहाड़ के अंतरंग रहस्यों का पता लगाने का काम शुरू किया। वह कई बार सामने से पहाड़ की ओर गया पर हर बार उसे जान बचाकर भागना पड़ा इन्हीं प्रयत्नों में केन. टी. का अपहरण कर लिया गया और अपैचियों ने उसकी जीभ काट ली जिससे उसकी मृत्यु हो गई। अंततः निराश वाल्ज ने रास्ता बदला। लंबा रेगिस्तान पार कर पीछे से पहाड़ी के पास पहुँचने में सफल हो गया।

रेगिस्तानी मैदान में तंबू गाढ़कर वाल्ज जैकब के साथ बाहर निकला अभी वह कुछ ही दूर जा पाया था कि उसे आग की-सी चिनगारियाँ अपनी ओर बढ़ती दिखाई दीं। रात थी—पर देखते-देखते दिन का-सा प्रकाश फैल गया उस प्रकाश में विचित्र भयंकरता थी। दोनों वहाँ से भागे तभी कुछ पत्थर उनके आस-पास गिरे। वाल्ज ने भागते एक पत्थर को छुआ तो देखा वह बिलकुल ठंडा था वह रुक गया पीछे मुड़कर देखा तो आग बरसाने वाली लपटें भी शांत हो चली थीं इसलिए वह फिर पहाड़ की ओर लौट पड़ा। उसे केन. टी. से इतना मालूम हो गया था कि पहाड़ के अंदर जाने के लिए एक सुरंग जाती है वाल्ज

कुछ ही देर के परिश्रम से सुरंग का दरवाजा पा गया। सहमता हुआ भीतर घुसा। वहाँ उसे कुछ कमरे और हजारों की संख्या में नर-कंकाल बिछे मिले। देखने से लगता था यह कंकाल हजारों वर्षों पूर्व तक के हैं। आगे बढ़ने पर उसे वह खड्ड भी दीख गया जहाँ सोने का लावा निकलता था पर सोने के वास्तविक स्रोत का पता नहीं चल सका न ही आगे का रास्ता मिल सका। वहाँ की भीषण गर्मी के कारण आगे बढ़ना कठिन हो गया। दल-दल के पास उन्हें बहुत-सा सोना भी मिला पर लौटते समय तांत्रिकों ने उन्हें देख लिया। जैकब तो वहीं मार दिया गया वाल्ज किसी तरह बच निकला। १८६१ में उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी डायरी के सहारे पीछे बरेनी आदि ने भी यात्राएँ कीं पर सोना बरसाने वाले इस पहाड़ के मूल स्रोत का कोई पता न लगा सका। आज तक सोना बरसाने वाले इस पहाड़ की वास्तविकता पर पर्दा ही पड़ा हुआ है। न कोई मृत्यु के कारणों को जानता है न सोने के मूल स्रोत को।

अकस्मात विपुल मात्रा में धन संपत्ति प्राप्त कर लेने के लालच में न जाने कितने व्यक्ति अब तक भारी प्रयत्न करते रहे हैं और हताश होते रहे हैं। इनमें से सफलता तो कदाचित ही किसी को मिली होगी, पर पश्चात्ताप अनेकों को करना पड़ा है।

संसार की स्वस्थ अर्थ परंपरा यह है कि हर व्यक्ति कठोर शारीरिक और मानसिक श्रम करे और उस न्यायोपार्जित धन से अपनी उचित आवश्यकताएँ पूरी करने के अतिरिक्त लोकमंगल के लिए भी अनुदान प्रस्तुत करे। ऐसा समुचित दृष्टिकोण जिनका नहीं होता उन्हें किसी भी प्रकार विपुल मात्रा में धन कमाने की उतावली रहती है ऐसे ही लोगों से स्वर्ण खोजियों की मनोरंजक गाथाएँ जुड़ी हुई हैं।

ब्राजील की भूतकालीन राजधानी रियो-डि-जैनरो के संबंध में पुरातत्त्व अभिलेखागार में सन् १७२४ का एक दस्तावेज रखा है। क्रमांक है इसका—५१२ इसका गंभीर अध्ययन करने के लिए संसार के कौने-कौने से इतिहासज्ञ, भूगोलवेत्ता, पुरातत्त्व विशारद और वैज्ञानिक आते रहते हैं और इस निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयत्न करते हैं कि इस दस्तावेज में लिखे तथ्यों से लाभ किस प्रकार उठाया जा सकता है ?

इन दस्तावेजों में एक हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखला के निकटवर्ती सघन वन में ऐसे ध्वंसावशेष नगर की चर्चा है, जहाँ किसी समय संभवतः ब्राजील की राजधानी रही होगी और कोई सभ्य जाति शासन

करती रही होगी। समय ने उस छोटी नगरी को खंडहर बना दिया किंतु वहाँ अभी भी उन ध्वंसावशेषों में बहुमूल्य स्वर्ण खंड बिखरे पड़े हैं। अनुमान है कि खुदाई करने पर वहाँ सोने और चाँदी के बहुमूल्य भंडार मिल सकते हैं। इस स्वर्ण भंडार के संबंध में जो समय-समय पर खोजें होती रही हैं, उन्हीं का क्रमबद्ध इतिहास उपरोक्त दस्तावेजों में सांकेतिक भाषा में लिखा हुआ है। इन अभिलेखों के आधार पर नियत स्थान तक पहुँच सकना किस प्रकार संभव हो सकता है ? ये विश्वस्त भी हैं या अविश्वस्त इसी उधेड़-बुन में अन्वेषकों की खोजबीन जारी रहती है।

दस्तावेजों के अनुसार वोलोविया और ब्राजील की सीमा के निकट हिमाच्छादित पर्वतमाला के समीप एक विस्तृत पठार है। यह ऊँची पर्वत श्रृंखलाएँ सदा घने कुहाँसे से ढकी रहती हैं। इसलिए हवाई उड़ानों से केवल पहाड़ी चोटियाँ दीखती हैं। नीचे क्या है, यह देखना उस धुंध के कारण कठिन हो जाता है।

विवरण के अनुसार अठारहवीं सदी के प्रारंभ में एक खोजी दल को इस क्षेत्र में जमीन में दबे हुए बहुमूल्य खजाने का आभास मिला और वह पता लगाने के लिए चला। उस क्षेत्र के सघन वनों में प्रवेश के कई महीनों के बाद उन्होंने उस क्षेत्र में कुछ ध्वंशावशेष देखे जो संभवतः वहाँ किसी छोटी-सी सुसंपन्न नगरी के थे जो भूकंप आदि दैवी विपत्ति के कारण नष्ट हो गई थी। इसी के खंडहरों में जहाँ-तहाँ सोने के सिक्के, सलाखें, बर्तन, शस्त्र आदि बिखरे पड़े थे। इससे प्रतीत होता था कि सोने का कितना बाहुल्य है ? यदि मलवे की खुदाई की जा सके तो इसके नीचे करोड़ों की संपत्ति निकल सकती है।

खोजी दल आवश्यक जानकारी एकत्रित करके वापिस लौटा तो उसने सहायता के लिए अपने साथियों को आने के लिए संदेश भेजा। परागुआस नदी के तट पर बसे आदिवासियों के हाथों उन्होंने एक पत्र भेजा। जिसमें उस स्वर्ण नगरी का नक्शा वहाँ की संपदा, पहुँचने का मार्ग आदि के बारे में सांकेतिक भाषा में बहुत कुछ लिखा है। यही है वह ५५२ नंबर का दस्तावेज जिसकी खोजबीन में भारी माथा- पच्ची की जाती रहती है।

पत्र यथा स्थान पहुँच गया । सहायक दल पहुँचा भी पर उसे अग्रगामी खोजी टीम का कुछ पता नहीं चल सका। संभवतः वे उस क्षेत्र के बर्बर नर-भक्षियों के शिकार हो गए होंगे। सहायक निराश वापिस लौट आए पर उन्होंने उस जानकारी को दूसरों के लिए उपलब्ध कर दिया।

तब से लेकर अब तक उस स्थान की खोज के लिए बहुत प्रयत्न हुए हैं पर एक में भी सफलता नहीं मिली।

विश्व प्रसिद्ध, ब्रिटिश अन्वेषी कर्नल पी. एच. फासेट अपने दो साथियों के साथ २० अप्रेल सन् १९२५ को उस खोज में निकले। रास्ते में वे अपने संदेश सूचना केंद्र तक पहुँचाते रहे। २ मई को भेजा हुआ उनका अंतिम समाचार मिला, उस दिन 'हेड हार्स केम्प' तक पहुँच गए थे। इसके बाद उनके समाचार आने बंद हो गए और फिर कुछ पता न चल सका कि आगे उन पर क्या बीती ?

इसके कुछ समय बाद कमांडर जार्ज ड्योट की अध्यक्षता में एक खोजी दल रवाना हुआ। वह फोसेट के अंतिम संदेश वाले स्थान से आगे बढ़कर किलीस्यू नदी को पार करता हुआ एक आदिवासी गाँव में पहुँचा जहाँ कलापलिस कबीले के लोग रहते थे। इतने समाचार आने के बाद उनका विवरण भी नहीं मिल सका। शायद किसी विपत्ति ने उनका भी अंत कर दिया।

इसके बाद १९४५ में लंदन के एक प्रोफेसर ऐरिक हेमिंड उस खोज पर निकले उन्होंने दस्तावेजों का अत्यंत बारीकी से अध्ययन किया और ब्राजील के नक्शों के साथ उसकी संगति बिठाई। इसके उपरांत वे हवाई जहाज, जीप, मोटर साइकिल, आदि का सहारा जहाँ तक मिला वहाँ तक सवारी से और बाद में पैदल चल पड़े। वे इस प्रदेश में ईसाई धर्म के प्रचार में निरत पादरी जोनयन वेल्स से मिले। उन्होंने पिस्टोको गाँव में एक छोटा गिरजा बना रखा था और बारह वर्ष से यह प्रयत्न कर रहे थे कि उस क्षेत्र के नरभक्षी आदिवासियों को ईसाई धर्म में दीक्षित कराएँ। पादरी ने इस विचित्र खोजी हैमंड की बात ध्यान से सुनी तो उस पर सलाह यही दी कि वह इस झंझट में न पड़कर वापिस ही लौट जाएँ क्योंकि इस क्षेत्र के नरभक्षी आदिवासी असाधारण रूप से बर्बर हैं। एक बार ब्राजील सरकार ने उनसे निपटने के लिए २५० सैनिकों की सशस्त्र टुकड़ी भेजी थी पर आदिवासियों ने उनमें से एक को भी जीवित नहीं लौटने दिया। आगे यहाँ का वन प्रदेश इतना जटिल है कि उसमें घुसकर लौटना संभव नहीं रहता।

बहुत समझाने-बुझाने पर भी हैमंड ने पीछे कदम हटाना स्वीकार न किया और वे आगे ही बढ़ने के लिए चल पड़े। चलते समय पादरी ने उन्हें १३ पालतू कबूतर दिए और कहा एक-एक करके वह इनके पैरों में पत्र बाँधकर उन तक संदेश पहुँचते रहें ताकि इस जानकारी को शोध केंद्र तक पहुँचाया जाता रहे। हैमंड ने संभवतः हर कबूतर के साथ आवश्यक संदेश

भेजे होंगे पर छटे, ग्यारहवें और तेरहवें नंबर के तीन कबूतर ही पहुँचे और शेष दस कहीं रास्ते में कहीं भटककर मर गए। इन तीन कबूतरों द्वारा आए पत्रों से पता चला कि हैमंड उस खंडहर प्रेत नगरी तक पहुँच गया है और वहाँ तक पहुँचने का रास्ता उससे बारहवें नंबर के कबूतर के द्वारा भेजा है। पर दुर्भाग्य से वह कबूतर ही गायब हो गया और उस जानकारी पर पर्दा ही पड़ा रह गया। अंतिम कबूतर के हाथों भेजे पत्र में हैमंड ने लिखा मैं बीमार पड़ गया हूँ, मेरा मृत्युकाल निकट है पर संतोष इस बात का है कि फार्सट द्वारा आरंभ की गई खोज का अंतिम चरण मैंने पूरा कर लिया। अब मैं शांतिपूर्वक मर सकूँगा। इस क्षेत्र के स्वर्ण खंडहरों का अस्तित्व काल्पनिक नहीं है ? "पादरी ने वह तीनों पत्र उपयुक्त स्थान तक भेज दिए और दस्तावेजों की श्रृंखला में वे भी एक कड़ी बन गए।

तेरहवें कबूतर के संदेश को आधार मानकर पादरी जोनायन ने स्वयं बहुत खोज-बीन की कि हैमंड का कुछ पता चल सके पर उन्हें सफलता न मिली इसके बाद ब्राजील सरकार से अनुरोध करके हवाई जहाज से उस क्षेत्र के फोटो खिचवाए पर उससे भी कुछ पता न चल सका कि वह ध्वंशावशेष आखिर कहाँ पर अवस्थित हैं ?

स्टेनेवे फर्नड को किसी प्रकार एक 'डायरी 'जेम्स' नामक व्यक्ति की लिखी हुई हाथ लगी, जिनमें अमेरिका स्थित एक खूनी पहाड़ का वर्णन था जहाँ सोना दबा ही नहीं पड़ा है वरन् बरसता भी है, वहाँ पहुँचने वाले के लिए अपना प्राण बचा सकना कठिन हो जाता है। डायरी लेखक उसी खोज में अपने प्राण गँवा बैठा था पर इससे पूर्व उसने उस स्वर्ण पर्वत के बारे में बहुत-सी जानकारियाँ लिख दी थीं ताकि किसी को वह मिल जाए तो उस संपदा से कोई अधिक सुयोग्य व्यक्ति लाभ उठा सके। स्टेनले की खोज यात्रा का मूल आधार यह डायरी ही थी। ओरेजना के अपेची स्टेशन पर उतरकर उसने साथी वेजामिन फरेश के साथ सौ मील लंबे निस्तब्ध वनों को पार करने की तैयारी की।

तीसरे पहर तीन बजे वे उस पर्वत के निकट पहुँच गए। एक घंटे ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान की तलाश में घूमते रहे। इतने में ही एक विपत्ति बरसी। फरेश के शिर में कहीं से आकर दो गोलियाँ लगी और वह खून से लथपथ होकर वहीं गिर पड़ा। स्टेनले भाग तो आया पर वह पागल हो गया। उसी के द्वारा बताया गया सनसनी खेज विवरण मैक्सिको और अमेरिका के समाचार पत्रों ने विस्तार पूर्वक छापा। यह मामला अमेरिका खुफिया पुलिस के एफ० बी० आई० को सौंपा गया। उसी क्षेत्र में इसी प्रकार एक और व्यक्ति कार्वेट मेरे को कुछ ही समय

पूर्व गोली लगी थी। घटनाक्रम की समानता के कारण पुलिस के लिए यह एक आवश्यक विषय बन गया। पर १३ वर्षों तक लगातार खोज करने के बाद भी कुछ पता न चल सका और मामला दाखिल दफ्तर कर दिया गया।

उस क्षेत्र में इसी प्रयोजन के लिए निकले हुए लोगों की हत्याओं के अनेक मामले सामने आए हैं। ये सभी स्वर्ण खोज में गए थे और किसी न किसी प्रकार वहीं मर कर समाप्त हो गए।

सन् १८५० से लेकर अब तक सैकड़ों व्यक्ति उस क्षेत्र में स्वर्ण संपदा का पता लगाने गए हैं; उनमें से अधिकांश तो अपने प्राण गँवा बैठे और जो वापिस लौटे वे मन के अरमान मन में ही दबाए खाली हाथ आए। प्रथम महायुद्ध के पराक्रमी योद्धा बरेनी ने इस क्षेत्र में अधिक दिन रहकर अधिक गहरी खोज की। उसका मत था कि इस क्षेत्र में संपत्ति है। इसका रहस्य अपेची कबीले के आदिवासी जानते हैं पर वे किसी को उस क्षेत्र में आने नहीं देते और तांत्रिक पुरोहित की आज्ञानुसार आगंतुकों की हत्या कर देते हैं।

उस क्षेत्र में सबसे अधिक दिन बाल्ज ही रहा और उसने ही अधिक खोजबीन भी की। अपने विवरणों के संदर्भ में उसने एक ऐसी सुरंग का उल्लेख किया है जिसमें सैकड़ों नर कंकाल भरे पड़े थे। संभवतः इस क्षेत्र में घुसने के पश्चात् यहाँ के रखवाले तूफानी देवताओं का अथवा तांत्रिकों का शिकार उन्हें बनना पड़ा होगा। घटनाएँ यह बताती हैं कि यदि कहीं स्वर्ण राशि छिपी भी है तो प्रकृति यह नहीं चाहती कि वह सहज ही किसी ऐसे व्यक्ति के हाथ लग जाए जो मुफ्तखोरी का लाभ उठाकर गुलछर्रे उड़ाए और घर परिवार वालों को हरामी, व्यसनी और अहंकारी बनाने के लिए कुबेर जैसी संपदा छोड़ें। इसलिए लगता है प्रकृति ऐसे प्रयत्नों को असफल बनाने के लिए कुछ न कुछ अड़ंगा खड़ा कर देती है और उन्हें सफल नहीं होने देती। वस्तुतः प्रकृति को दो लोगों से अरुचि है— एक मुफ्तखोर, दूसरा कामचोर। दोनों के अपराधों को वह सदा उचित दंड देती है।

❐ ❐

# अनावश्यक धन-संग्रह विपत्ति उत्पन्न करता रहेगा

पृथ्वी उतनी ही संपत्ति उत्पन्न करती है जितनी उसके पुत्रों के निर्वाह के लिए नितांत आवश्यक है। इस अनुदान को सभी लोग सहोदर भाइयों की तरह मिल-बाँटकर खाएँ तो सबकी जीवन यात्रा सुखपूर्वक चलती रह सकती है और बचा हुआ समय मानवी जीवन के महान उद्देश्यों की पूर्ति में लग सकता है। सुख-शांति का वातावरण इसी नीति को अपनाए रहने में बना रह सकता है।

बुद्धि विपर्यय से ग्रस्त मनुष्य अमीर बनने का प्रयत्न करता है। इधर-उधर से समेटकर संपत्ति अपने नीचे जमा करता है। इसके दो परिणाम होते हैं एक तो संग्रहकर्त्ता का परिवार अमीरों के अहंकार में उद्धत आचरण करने पर उतारू होता है विलासिता में डूबता है और अनेक व्यसनों तथा दोष-दुर्गुणों का शिकार होता है। दूसरी ओर निर्धनों का शोषण होता है और असमानताजन्य ईर्ष्या जगती है। ऊँची दीवार उठाने के लिए कहीं न कहीं गड्ढा करके ही मिट्टी निकालनी पड़ती है। दूसरों को गरीब बनाए बिना कोई अमीर नहीं बन सकता। कानूनी या गैर-कानूनी तरीके अपनाकर उसे शोषण करने एवं निष्ठुरता अपनाने के मार्ग पर ही चलना पड़ेगा। अन्यथा धन संग्रह न हो सकेगा। अधिक उपार्जनकर्त्ता को अधिक उदार भी होना चाहिए और अपनी विशेष प्रतिभा का विशेष लाभ समाज को देना चाहिए। इस प्रकार अधिक उत्पादन का कौशल उसे सम्मान एवं संतोष देकर फिर उदार कार्यों द्वारा वितरित हो जाता है। लिप्सा और निष्ठुरता धारण किए बिना किसी के लिए भी अमीरी संभव नहीं।

तत्त्वदर्शियों ने 'परिग्रह' को सर्व प्रधान पाँच प्रमुख पातकों में से एक माना है और सौ हाथों से कमाने के साथ-साथ हजार हाथों से दान करने का—सत्कार्यों के लिए समाज को लौटा देने का-निर्देश किया है। किंतु लालची मनुष्य धनी बनने की ललक में अमीरी जमा करता जाता है। निश्चित रूप से यह विश्व व्यवस्था के प्रति विद्रोह है। इस संग्रह पाप

का दुष्परिणाम न केवल संग्रहकर्त्ता को वरन् समस्त समाज को भुगतना पड़ता है।

अमीरी जहाँ भी संग्रहीत हुई है वहीं विपत्ति आई है और उस संपदा का दुर्दशाग्रस्त दुःखद अंत हुआ है। संग्रहीत खजाने जहाँ-तहाँ फिर भूमिसात् हुए हैं या समुद्र में डूबे हैं और उनके संग्रहकर्त्ता रोते-कलपते संसार से विदा हुए हैं।

इटली, फ्रांस और अलजीरिया के बीच एक छोटा-सा टापू है—कौर सिया। इस पर फ्रांस का आधिपत्य है। यहाँ की सभ्यता को इटली और फ्रांस का समिश्रण कहा जा सकता है। इसी के समीप वास्तिया खाड़ी के उथले समुद्र में जर्मन सेनापति रोमेल द्वारा अफ्रीका से लूटा हुआ खजाना डूबा पड़ा है। इसकी कीमत सत्रह अरब डालर आँकी जाती है।

द्वितीय महायुद्ध में जर्मनी ने जब अफ्रीका पर हमला बोला तो वह पहली बार तो आँधी-तूफान की तरह बढ़ता चला गया और हजारों मील बढ़ता चला गया। किंतु जब मित्र राष्ट्रों ने डटकर मुकाबला किया तो उसके पैर उखड़ गए। इस बीच उसने अपने अधिकृत क्षेत्र के सभी धनी लोगों को पकड़-पकड़कर उनके पास जो कुछ था सभी लूट लिया। इस लूटे धन को वह बराबर जर्मनी भेजता रहा। पर जब रोमेल को वापिस लौटना पड़ रहा था तब तो उसने लूट को अत्यंत तीव्र कर दिया और जल्दी-जल्दी धनराशि इकट्ठी करके उसे अपने देश पहुँचाने में जुट गया। एक बड़ा स्टीमर भरकर रातों-रात विपुल धन उसने जर्मनी भेजा। यह १७ सितम्बर १९४३ की बात है। सब सामान लोहे के मजबूत बक्सों में बंद कर दिया गया और तहखानों में ताले लगाकर सील कर दिया गया।

समुद्र में भी दोनों पक्ष के युद्ध-पोत और पनडुब्बियाँ चक्कर लगा रहे थे इसलिये इस स्टीमर को चक्करदार रास्ते से भेजा गया। रास्ते में जहाजी कर्मचारियों की नीयत बिगड़ी और वे खजाने को लूट ले जाने पर आमादा हो गए। कप्तान के साथ हील-हुज्जत के सिलसिले में स्टीमर खतरे में पड़ रहा था, दूसरी ओर विपक्ष की पनडुब्बियों को जर्मन नौका जाने का सुराग लग गया। उसे पकड़ने की मोर्चाबंदी बन गई। ऐसी दशा में स्टीमर के कप्तान ने यही उचित समझा कि खजाना समुद्र में डुबो दिया जाए और कर्मचारियों से पूछताछ करने पर कुछ भेद न मिल सके इसलिये स्टीमर के कप्तान ने यही उचित समझा कि

शत्रु पक्ष के हाथों पड़ने की अपेक्षा आत्म-हत्या कर लेना उचित है। अस्तु जर्मनों ने अपने ही बमों से उसे उड़ा दिया और स्टीमर धज्जी-धज्जी होकर उड़ गया। पीछे यह पता भी लग गया कि इसी में रोमेल के भेजे हुए धन का बहुत बड़ा भाग भरा हुआ था।

तब से लेकर अब तक कितने ही बार उस खजाने को समुद्र में ढूँढ़ने और निकालने के प्रयत्न हुए हैं, पर इस प्रयास का दुःखद अंत हुआ है। गोताखोरी के लिए निकली हुई टीमें किसी न किसी दैवी विपत्ति में फँसकर अपने प्राण गँवाती रही हैं। सफलता का कोई सूत्र किसी के भी हाथ नहीं लगा। इन दुर्घटनाओं की श्रृंखला के पीछे अनुमान लगाया जाता है कि स्टीमर के जर्मन कप्तान का प्रेत उसकी चौकीदारी करता है और जो उसे निकालने का प्रयत्न करता है उसकी जान लेकर छोड़ता है।

न्यूयार्क में स्टैनले पब्लिकेशन की पत्रिका 'मैंस लाइफ के सितम्बर १९६६ के अंक में मार्टिन ब्रैंटस द्वारा बंगाल की खाड़ी से करोड़ों रुपए की भूमिगत रत्नराशि खोद निकालने का विस्तृत विवरण छपा है।

मार्टिन ने सुन रखा था कि बंगाल की खाड़ी में समुद्री डाका डालने वाले गिरोह का सरगना 'वस्तुम' था। उसने अपना एक मजबूत जहाजी बेड़ा बना रखा था और कितने ही डाका डालने की कला में प्रवीण डाकू अपने गिरोह में भर्ती किए थे। दस वर्ष तक उसने उस क्षेत्र में पूरा आतंक फैला रखा था। व्यापारिक जहाज कहीं जाते तो यह समझकर लंगर खोलते कि उन्हें वस्तुम से आत्म रक्षा करनी पड़ेगी। इस प्रयोजन के लिए ये अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित एवं कुशल तैराक योद्धा भी साथ लेकर चलते थे तो भी जहाँ भी दाव लगता वह डाकू अपना आतंक प्रस्तुत कर देता और बहुमूल्य वस्तुएँ लूटकर ले जाता। इस प्रकार उसने करोड़ों रुपए की संपत्ति जमा की। उसे रखा कहाँ जाए ? इस प्रश्न का समाधान उसे बंगाल की खाड़ी में छितराते हुए छोटे-छोटे द्वीपों में मिला। उसे अपनी योजनाएँ बनाने और जहाजों की मरम्मत, भोजन व्यवस्था, दवादारू आदि को जरूरत पड़ती इसलिये उसे अपना अड्डा बदल-बदल कर इन द्वीपों में ही रखना पड़ता था।

यह बात नौवी सदी के अंतिम वर्षों की है। उन दिनों उत्तर भारत में राजा भोज का शासन था। भोज के बेटे महेंद्रपाल ने अपना राज्य बढ़ाया और उसे बंगाल की खाड़ी तक पहुँचा दिया। खाड़ी का बंदरगाह

विदेशों से व्यापार बढ़ाने का अच्छा साधन था। महेंद्रपाल का पूरा ध्यान इस ओर था, पर डाकू वस्तुम के आतंक ने वह मार्ग एक प्रकार से अवरुद्ध ही कर रखा था। इसलिये यह आवश्यक हो गया कि समुद्र को डाकुओं के खतरे से मुक्त किया जाए। उड़ीसा के राजकुमार की सहायता से वस्तुम को किसी बड़े प्रलोभन का लालच देकर महेंद्रपाल ने पकड़वा लिया इसके बाद उसके जहाज भी जब्त कर लिए गए और साथी डाकुओं को जेल में डाल दिया गया।

वस्तुम को तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं कि वह अपने अब तक के छिपे खजाने का भेद बताए। किंतु वह भी ऐसी मिट्टी का बना था कि टस से मस नहीं हुआ और यंत्रणाएँ सहते-सहते अपने प्राण गँवा दिए।

तब से लेकर बहुत दिनों तक वस्तुम के खजाने की बहुतों ने खोज की पर किसी के हाथ कुछ न लगा। अंग्रेजी शासन काल में मारटिन ब्रेंस्टक ने उस खजाने की अति गंभीरतापूर्वक खोज की। खाड़ी में छोटे-बड़े ८१ द्वीप हैं। इनमें से जो इस काम के थे कि उनमें डाकुओं के ठहरने की सुविधा हो सकती है, उनकी संख्या १०-१२ निकली। उनमें से भी अधिक उपयुक्त केवल एक निकला।

इसी की खोज करने का निश्चय किया गया मार्टिन अपने साथ कलकत्ते की एक नर्त्तकी को अपना दुभाषिया बनाकर वहाँ ले गया उस द्वीप पर एक मुसलमान राजा राज्य करता था। काजी का उस पर असर था। काजी को मिलाकर मार्टिन ने खुदाई की स्वीकृति प्राप्त करली। खुदाई का उद्देश्य खजाना है यह तो नहीं बताया पर वहाँ कोई बड़ी खान निकलने की संभावना बताकर उन्हें संतुष्ट कर दिया।

खुदाई उन्होंने कई जगह की तो एक जगह उन्हें सचमुच ही सोने और रत्नों से भरा संदूक मिल गया, जिसे किसी तरह छुपाकर अपनी नाव में पहुँचाने में सफल हो गए और उस द्वीप वालों के सहयोग की सराहाना करते अपने दुर्भाग्य का रोना रोते वे लोग वापिस लौट आए। वे लोग ४० करोड़ डालर की संपत्ति में से सिर्फ कुछ लाख पा सके, पर पीछे आपसी फूट पड़ जाने से उपयोग करने के स्थान पर जान ही गँवा बैठे।

द्वितीय महायुद्ध के समय जब जापानियों ने अमेरिका के पर्ल हार्वर पर हमला किया तो सर्वत्र आतंक छा गया। जापान उन दिनों सचमुच इतना समर्थ बन चुका था कि वह अणुबम आड़े न आता तो वह अपने

प्रभाव क्षेत्र में उसी प्रकार पैर फैला लेता जिस तरह कि योरोप में जर्मनी ने फैलाए थे।

प्रशांत सागर के फिलीपाइन द्वीप समूहों में अमेरिका की प्रचुर संपत्ति जमा थी। यह कहीं जापानियों के हाथ न पड़ जाए इस आशंका से अमेरिका उसे नष्ट करने पर तुला हुआ था। लगभग एक करोड़ रुपए के सरकारी खजाने के नोट आग लगाकर नष्ट कर दिए गए। एक पनडुब्बी भरकर सोना, चाँदी तथा दूसरी चीजें अमेरिका भेजी जा चुकीं थी। फिर भी कई करोड़ के चाँदी के सिक्के जमा थे, उन्हें हटाने का अवसर भी निकल चुका था। अस्तु यही निश्चय किया गया कि उसे लोहे के बक्सों में बंद करके समुद्र में डुबो दिया जाए। सैनिक फैसले के अनुसार ६ मई १९४२ को फिलीपाइन की कवैली खाड़ी में उन संदूकों को डुबो दिया गया। इसके तुरंत बाद जापानी सेना ने उस सारे क्षेत्र पर अपना कब्जा कर लिया।

खजाना डुबोने का सुराग जापानियों को लग गया। उन्होंने पकड़े हुए अमेरिकी गोताखोरों को भय और लालच दिखाकर इस बात के लिए रजामंद कर लिया कि डूबे हुए खजाने को निकालने में सहायता करें। उन्हें वैसा ही करना पड़ा। कुछ संदूक ज्यों के त्यों निकाल भी लिए गए पीछे अमेरिकी गोताखोरों ने सोचा यह अमेरिकी धन उन्हीं के देशवासियों के विरुद्ध गोला-बारूद बनाने में काम लाया जाएगा। इसलिए कोई तरकीब निकालनी चाहिए। उन्होंने कुछ बक्से साबुत निकाल देने और कुछ के पैंदे ढीले करके सिक्के समुद्र में बिखेर देने का रास्ता निकाल लिया। कुछ खाली कुछ भरे बक्से निकलते रहे। जापानी भरे बक्सों पर प्रसन्न थे और खाली देखकर इसे पेटियों की कमजोरी से उत्पन्न दुर्भाग्य मानकर संतोष करते रहे। कहते हैं कि जितना धन निकाला गया उससे कई गुनी संपत्ति समुद्र की अथाह जलराशि में छितरा दी गई और अब उसे ढूँढ़ निकालने की कोई संभावना नहीं है।

अमेरिका की वीहड़ भूमि पर जब गोरों ने अधिकार जमाया तो उन्हें लुप्तमय संस्कृति के अवशेषों के साथ-साथ उन लोगों के संचित स्वर्ण भंडार भी जहाँ-तहाँ जमीन में दबे हुए मिले। इसके अतिरिक्त वह भूमि वैसे भी स्वर्णगर्भा रही है। अनेक स्थानों पर छोटी-बड़ी खदानें हैं जिनमें सोना पाया और निकाला जाता रहा है।

इस धनराशि को लूट-लूटकर गोरे लोगों ने मुद्दतों अपने-अपने देशों को प्रचुर परिमाण में दौलत भेजी है। स्पेनी, फ्रांसीसी, इतालवी तथा अन्य देशों के गोरे भी अंग्रेजों के प्रतिद्वन्द्वी रहे हैं और एक-दूसरे की उपलिब्धयों को लूट लेने में भी अपने हथकंडे अजमाते रहे हैं। बेचारे आदिवासी रैड इंडियनों को बड़ी संख्या में इसी लूट-खसोट के सिलसिले में अपनी जानें गँवाना पड़ी हैं।

सन् १८७० की बात है। कैलीफोर्निया के इंडियन वैल्स नामक कस्बे में एक ऐसे खूसट गोरे का दिनदहाड़े कत्ल हुआ जिसने प्रचुर परिणाम में सोने और चाँदी के बक्से भरकर जमा किए थे, पर उन्हें वह किसी काम में खर्च नहीं करता था। लुटेरों ने उस पर हाथ साफ किया। पूछने पर जब उसने दौलत का पता नहीं दिया तो उसे काट डाला गया। पर दौलत लुटेरों के हाथ भी नहीं लगी वह जहाँ-तहाँ जमीन में ही गड़ी रही।

प्रथम महायुद्ध के सात वर्ष बाद जमीन में युद्ध प्रयोजन में बिखरी हुई धातुएँ ढूँढ़ने वाले विभाग का एक इंजीनियर अपने काम का एक उपयोगी यंत्र बना चुका था। कुछ दिन उसका प्रयोग करने के बाद उस इंजीनियर के मन में यह विचार आया कि क्यों न वह इस यंत्र की सहायता से अमेरिका में दबे हुए छिपे खजानों को ढूँढ़ निकाले। इस विचार से उसकी आँखें चमक गईं और अपने उपकरण लेकर अमेरिका चल पड़ा। उसका नाम था—फ्रेंकफिश।

फ्रेंकफिश ने इंडियन वेल्स में हुई एक धनी की हत्या और उसकी जमीन में दबी संपत्ति की चर्चा सुनी तो अपना पहला प्रयोग वहीं करने का निश्चय किया। भाग्य ने साथ दिया और उसने वह खजाना ढूँढ़ ही निकाला। ६७०० चाँदी के सिक्के, ३००० सोने की मुहरों के अतिरिक्त एक छोटे बक्से में हीरों के आभूषण भी उसे मिले।

जिस बुड्ढे की हत्या हुई थी वह पेउन स्नी डाकुओं में से एक था जिसके दल के पास ८० हजार स्वर्ण मुद्राएँ जमा हो गई थीं, किंतु दल में फूट पड़ जाने के कारण कुछ तो आपस में ही लड़ मरकर समाप्त हो गए थे और कुछ जितना हाथ पड़ा उतना लेकर भाग खड़े हुए थे। वह भी दौलत को छिपाने के चक्कर में ही सारी जिंदगी गँवा बैठा। इसी के ताने-बाने दिन-रात बुनता रहा और अंततः उसी में उलझकर मर गया।

उस खजाने को निकालते समय जो अनुभव हुए उसकी विस्तृत गाथा फ्रेंकफिश ने प्रकाशित कराई है और बताया है कि किस तरह उसे खजाने की रखवाली पर बैठी मृतात्मा का डरावना चेहरा और आँखों से निकलता आक्रोश देखने को मिला। फिर भी वह बिना डरे अपने काम पर लगा ही रहा।

फ्रेंकफिश ने शेष जीवन में खुदाई का काम जारी रखा और कई खजाने तथा पुरातत्त्व की दृष्टि से मूल्यवान अवशेष ढूँढ़ निकाले। उन सबका उसने एक संग्रहालय बना दिया है और धन ऐसे कामों में लगा दिया है जिससे सार्वजनिक हित साधन हो सके, वह कहता रहा कि बिना परिश्रम का धन किसी के लिए भी उपयोग के लायक नहीं हो सकता।

फ्रेंकफिश अपेक्षाकृत अधिक बुद्धिमान निकला। उसने खजाना डुबाने वाले और निकालने वालों में कुछ अंतर प्रस्तुत किया है। उसने ख्याति प्राप्त करने में संतोष कर लिया और हराम की कमाई को हजम करने के लालच में अपनी आतें न फाड़ लेने की बुद्धिमत्ता दिखलाई। उसे जो मिला है, उसने अमेरिका के पुरातत्त्व विभाग को सौंप दिया है।

अधिक अमीर बनने—संग्रह करके सौ पीढ़ियों के लिए मौज उड़ाने की व्यवस्था करने वाले लोग पाते कम और खोते ज्यादा हैं। यह तथ्य खजानों के दुःखद अंत की उपरोक्त घटनाओं से समझा जा सकता है। छोटे रूप में तो यही प्रयास हममें से हर कोई करता रहता है। यही ललक जब तक छूटेगी नहीं तब तक विश्व व्यवस्था के प्रति किया गया विद्रोह-अनावश्यक धन-संग्रह केवल विपत्ति ही उत्पन्न करता रहेगा।

भूमिगत खजानों की चर्चा संसार में अन्यत्र भी होती रहती है, पर भारत में तत्संबंधी तथ्यों और किंवदंतियों का ऊहापोह अपेक्षाकृत अधिक ही होता रहता है। इन खजानों में कितनी राशि है ? कहाँ छिपी है ? और उसे प्राप्त करने के लिए क्या किया जा सकता है ? प्रायः इन्हीं प्रश्नों पर चर्चा होती रहती है। खुदाई के अनेक प्रयत्न होते रहते हैं ? पर उनमें सफलता कदाचित ही थोड़ी बहुत मिल पाती है। इससे दो निष्कर्ष निकलते हैं—एक तो यह कि वे गाथाएँ असत्य हैं, दूसरा यह कि उनका स्थान जानने और प्राप्त करने के उपाय हस्तगत नहीं हो जाते। इन्हीं दो संदर्भों में छानबीन चलती रहती है। उत्सुक व्यक्ति इन्हीं के

टिप्पणी पर माथा-पच्ची करते रहते हैं और उपाय करते हैं कि किसी प्रकार उस धनराशि का पता लगाया और लाभ उठाया जाए।

इस संदर्भ में एक तीसरा तथ्य और भी अधिक विचारणीय होना चाहिए कि सृष्टा की अनेकानेक विधि व्यवस्थाओं में धन संबंधी नीति, मर्यादा और व्यवस्था क्या उनसे है ? समझ पाने पर एक ऐसी बाधा बनी रहेगी जिसके कारण उस भूमिगत धन का पाना और पाकर उससे लाभ उठाना संभव हो ही नहीं सकेगा।

सर्वविदित है कि इस धरती और समुद्र के गर्भ में बहुमूल्य खनिजों के विशाल भंडार दबे पड़े हैं। सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि धातुओं की खदानें आखिर जमीन से ही तो निकलती हैं। कोयले को काला सोना और तेल को पतला सोना कहा जाता है। हीरा, पन्ना, नीलम, पुखराज आदिरत्न खनिज ही हैं और जमीन से खोदकर निकाले जाते हैं। मोती, मूँगा आदि समुद्र में पाए जाते हैं। दूसरे रासायनिक पदार्थ भी प्रकारांतर से भूमि और जल की संपदा ही हैं। यह समझने में किसी को कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि भूमि ही रत्नगर्भा है। समुद्र को भी एक सीमा तक ऐसा ही श्रेय मिल सकता है। यह संपदा सर्वसुलभ क्यों नहीं ? इसका उत्तर एक ही है कि उचित परिश्रम, मनोयोग और कौशल के फलस्वरूप ही सही पारिश्रमिक के रूप में ही प्रकृति यह संपदा किसी को देना चाहती है। पात्रता के मूल्य पर अनुदान पाने की ही सृष्टि व्यवस्था है। मुफ्त की संपदा अनैतिक है। भले ही वह जुए सट्टे में कमाई गई हो, उत्तराधिकार में पाई गई हो या लूटकर लाई गई हो। जो उचित परिश्रम के प्रखर कौशल के आधार पर कमाया गया है वह नैतिक है। नीतियुक्त संपदा के साथ एक और मर्यादा जुड़ी हुई है कि उसका उपभोग या संग्रह नहीं हो सकता, उसका उपयोग होना चाहिए और सर्वजनीन वितरण भी। व्यक्तिगत लिप्सा के लिए संपदा को जमा करना माता लक्ष्मी को बंदिनी, रखैल औरत का दर्जा देने के बराबर है। इसी प्रकार सामान्य लोक निर्वाह की अपेक्षा बहुत अधिक अमीरी का उपभोग भी अपने से छोटों के लिए मिलने वाले भाग को हड़प जाने के बराबर है। मनुष्यकृत कानून में दंड की व्यवस्था भले ही रखी न गई हो, पर ईश्वरीय नीति-मर्यादा में यह धारा सुनिश्चित रूप से विद्यमान है कि संपदा उचित पौरुष और कौशल के सहारे ही कमाई जाए और उपार्जन के उपरांत उसका उपयोग अपने लिए उतना ही किया जाए जितना कि

औसत नागरिक के हिस्से में आता है! शेष को संव्याप्त अभाव और पिछड़ेपन के निवारण में तत्काल उदारतापूर्वक वितरित कर दिया जाए।

इस नीति मर्यादा की कसौटी पर जब खजानों में दबी संपदा को परखा जाता है तो प्रतीत होता है कि वह हर दृष्टि से खोटी है। उसमें धन संबंधी नीति मर्यादाओं का पूरी तरह उल्लंघन हुआ है फलस्वरूप उसके संग्रही वैसा लाभ न उठा सके जैसा कि वे चाहते थे। जिस प्रकार उन्होंने उसे हड़पने की चेष्टा की उसी प्रकार प्रकृति ने उनके हाथ से छीन लिया। यह छीना भी सामान्य रीति से नहीं वरन् करारे तमाचे लगा-लगाकर उसे उगलने के लिए बाध्य किया गया।

भूमिगत खजानों में कितनी राशि है और किस स्थान पर दबी है ? यह जानने से पूर्व इस अपेक्षित तथ्य को भी जानना चाहिए कि वह किस प्रकार पाई और क्यों छिपाई गई है ? स्पष्ट है कि वह धनराशि किसी ने उचित परिश्रम करके नहीं कमाई है, उसे न्यायोचित परिश्रम का प्रतिफल नहीं कह सकते। वह विशुद्ध रूप से लूटमार का धन है। ऐसी लूटमार जिसके कारण अनेकों को अपने निर्वाह साधनों से लेकर प्राणों तक का परित्याग करना पड़ा है। सभी जानते हैं कि लुटेरे उठाईगीरे ही नहीं होते वे उत्पीड़न और आक्रमण की असह्य प्रताड़नाएँ भी देते हैं और जिससे छीना गया है, उसके सामान्य जीवन-क्रम को उस पदाघात से तोड़-मरोड़कर रख देते हैं। खजाने ऐसे ही लुटेरों की आततायी दुष्प्रवृत्तियों के प्रतिफल हैं। उन्हें जिस निर्दयता के साथ कमाया गया उसी संकीर्णता के साथ व्यक्तिगत उपयोग के लिए जमा करके रखा गया। रखे कहाँ ? ऐसे अनीति उपार्जन को दूसरे अधिक बलिष्ठ लुटेरे छीनने को तैयार बैठे रहते हैं। भविष्य में उपभोग के लिए संग्रह और अन्य बलिष्ठों से बचाव की दृष्टि से ही उन्हें भूमिगत किया गया होता है। यदि ऐसा न होता तो उसका न तो संग्रह ही हो पाता और न सामयिक सदुपयोग की व्यवस्था करने की अपेक्षा जमीन में दबा देने की आवश्यकता पड़ती। स्पष्ट है कि इन खजानों की उपलब्धि और छिपाकर रखने की प्रवृत्ति के पीछे नैतिकता की एक किरण भी कहीं दीख नहीं पड़ती नीति का समावेश होता तो उसे न्यायोचित रीति से कमाने और आवश्यकता से अधिक होने पर तत्काल सामयिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए उसका उपयोग करने की योजना जुड़ी होती, उसे जमीन में दबाने की आवश्यकता ही न पड़ती। अनीति का समावेश जहाँ भी

होगा, वहाँ दैवी अभिशाप बरसेगा और प्रसंग बनेगा जिसके अनुसार आक्रांताओं को उसका लाभ उठाने से वंचित रहना पड़े। खजानों के लुप्त हो जाने, भूमि द्वारा वापिस छीन लिए जाने के पीछे सृष्टा की इसी नीति-मर्यादा को काम करते हुए देखा जा सकता है।

कोई जमाना था जब राजा जनक जैसे ब्रह्मज्ञानी हल चलाकर कृषि कर्म द्वारा अपना व्यक्तिगत गुजारा करते थे और प्रजा द्वारा राजस्व के रूप में उपलब्ध हुए प्रजा-धन को प्रजाहित में लगा देने की व्यवस्था करते थे। राजा हरिश्चंद्र ने सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपना सर्वस्व विश्वामित्र के सुपुर्द कर दिया था। संचय हो जाने पर राज्याधिकारी सर्वमेध यज्ञ का आयोजन करते थे अर्थात् संग्रहीत संपदा को सामयिक सत्प्रयोजनों के लिए पूरी तरह खर्च कर डालते थे और खजाने को सहज ही झाड़-बुहारकर पूरी तरह स्वच्छ कर देते थे। जहाँ अनीति उपार्जन ही नहीं है, वहाँ संग्रह की आवश्यकता ही क्यों पड़ेगी ? विशेषतया व्यक्तिगत उद्धत उपभोग की बात तो सोचने तक में न आ सकेगी। ऐसी दशा में ऐसी धनराशि जमा ही न हो सकेगी, जिसे भूमिगत करने की आवश्यकता पड़े। अनैतिकता ही है जो छिपने और छिपाने के जाल-जंजाल बुनती रहती है। खजाने इसी कारण दबते-दबाए जाते हैं।

स्पष्ट है कि डाकुओं की लूटपाट से प्राप्त हुई संपदा ही खजानों में दबी पड़ी है। सामान्य व्यक्ति को डाकू कहा जाता है। बलवान को सामंत शूरवीर, भूपति आदि नाम दे दिए जाते हैं। यह तो कहने वालों की इच्छा पर निर्भर है। अनीति उपार्जनकर्त्ता को हेय तो ठहराया जाएगा भले ही उसे तिरस्कृत नाम दिया जाए अथवा डर के मारे सम्मानित शब्दों में विभूषित किया जाए। तथ्य अपनी जगह पर जहाँ के तहाँ बने रहेंगे। जिन दिनों खजाने जोड़ने और पढ़ने की आपाधापी थी वह सामंतवादी जमाना था। उन दिनों जिनकी लाठी उसकी भैंस का जंगली कानून चलता था। फलतः आक्रमण और लूटमार का दौर ही सर्वत्र छाया रहता और उसी की तैयारी या सुरक्षा की बात हर किसी के दिमाग पर छाई रहती थी आए दिन युद्ध ठनते थे इनका कोई नैतिक आधार नहीं था। प्रजा को संपदा, तरुणों और तरुणियों की गुलामों के रूप में पकड़-धकड़, राजमहलों पर अधिकार शोषण के लिए अधिक भूमि पर अधिकार, निरंकुशता बरतने के लिए अधिक साधन-संपन्नता जैसे उद्देश्य ही उन दिनों के आक्रमणों के पीछे काम करते थे। इसी कुचक्र में

अनेकों की निरीह निर्दोष प्राण गँवाने और मर्मांतक कष्ट सहने पड़ते थे। सामंतों की सेनाएँ लूटपाट करती थीं। उनका बड़ा भाग तो अधिनायक के पास जा पहुँचता था, पर होता यह भी था कि उनके चतुर सेनापति और सिपाही अपने दाँव-पेच भी ढूँढ़ते थे और जहाँ भी अवसर मिलता उस लूट के माल का बड़ा भाग अधिनायक तक पहुँचाने की अपेक्षा बीच में स्वयं ही हड़प लेते थे। इसे वे रखें कहाँ ? जमीन में दाब देना ही एकमात्र उपाय था। प्रायः यही है वह तात्त्विक इतिहास जो इन खजानों के पीछे छिपा पड़ा है जिनकी उछाड़-पछाड़ के लिए कितने ही लोग कितने ही प्रकार से सोचते और ललचाते रहते हैं ?

खजाने किस प्रकार जमा हुए इसके कुछ उदाहरण सामने हैं—

अकबर का विश्वासी सेनापति अबुल-फजल, हैदराबाद की लूट का धन लेकर दिल्ली वापिस जा रहा था। उसके पास २३ करोड़ नकदी और लगभग इतनी ही रत्न राशि थी। रास्ते में ओरछा के राजा ने उसे पकड़कर मार डाला और सारा पैसा छीन लिया। ओरछा के अभिलेखों में इसका उल्लेख है।

अनीति उपार्जन में एक बड़ी कठिनाई यह रहती है कि संग्रहकर्त्ता की संकीर्ण स्वार्थपरता उसे किसी उपयोगी काम में लगाने की उदारता नहीं दिखा सकती। उसे यहाँ से वहाँ छिपाए फिरने की ही तरकीबें रहती है। अंततः उसका क्या होना है यह बात ऐसे लोगों के मस्तिष्क में उपजती ही नहीं।

रतलाम के जंगलों में छिपाए गए एक खजाने का विवरण उपलब्ध ताम्र पत्र में इस प्रकार मिलता है—(१) सोने की १०८६ ईंटें, (२) मोटे मोतियों की माला २५६, (३) सोने की छड़ें ११६२२, (४) खुले मोती ४५६७८, (५) कंठे हीरों के २२-कंठे अन्य रत्नों के ३७ इसके अतिरेक्त अनेकों रत्न जटित स्वर्ण आभूषणों की बड़ी सूची और भी है।

शाहजहाँ को जब यह लगा कि उसका बेटा औरंगजेब विश्वास पात्र नहीं रहा तो उसने अपने खजाने का बहुमूल्य हिस्सा कानपुर के समीपवर्ती जंगलों में गढ़वा दिया। एक ताम्र पत्र में इसका वर्णन कैथी लिपि में मिलता है। जिससे पता चलता है कि नौ सौ स्थानों में भी यह सोना, चाँदी तथा जवाहरात भरे गए थे और जमीन में दफनाए गए थे।

खजाना गाढ़ने के समय जो तांत्रिक विधि-विधान पूजा-उपचार की तरह प्रयुक्त होते थे उसका वर्णन देखने से ऐसे विवरण मिलते हैं जो

उस दुरभि संधि के साथ ठीक तरह तालमेल बिठा देते हैं। गाढ़ने वाला अपने निवास से दक्षिण दिशा में उसे गाढ़ता था क्योंकि यह प्रेतों की दिशा है। प्रेतों को उसका संरक्षक नियुक्त करने के लिए उनके आवाहन, पूजन परिपोषण अनेकों पशु-पक्षियों तथा मनुष्यों की बलि चढ़ाकर किया जाता था। उन्हें घड़ा मद्य प्रस्तुत किया जाता था। इतने उपहार पाकर वे चौकीदारी करते रहने की सहमत किए जाते थे।

कहा जाता है कि यह प्रेत ही विशाल सर्पों के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी उस खजाने की रक्षा करते रहते हैं। यह सर्प अपने लिए तो उसे काम में ला नहीं सकते, पर किसी अन्य को भी-किसी भले या बुरे उपयोग के लिए लेने नहीं देते। जो जिसे प्राप्त करने की कोशिश करता है, उस पर सर्प या प्रेत के रूप में टूट पड़ते हैं और ठीक उसी मनोवृत्ति का परिचय देते हैं, जो इस खजाने को जमा करने और गाढ़ने वाले की रही थी। हो सकता है उस संग्रहकर्त्ता की दुष्प्रवृत्तियाँ ही प्रकारांतर से सर्व समुदाय या प्रेत संरक्षकों का रूप धारण करके उसकी चौकीदारी में संलग्न रहती हों।

खजाना गाढ़ने की तरह ही उसे उखाड़ना भी खतरे से खाली नहीं है। यह प्रकृति की मर्यादा और ईश्वर की इच्छा के विपरीत है। उपार्जन कठोर परिश्रम और न्याय नीति के आधार पर होना चाहिए। प्रकृति-परमेश्वरी को दो प्रवृत्तियाँ नापसंद हैं। (१) मुक्तखोरी (२) कामचोरी। औसत मनुष्य की तरह श्रमपूर्वक एवं संयमपूर्वक निर्वाह करके जो शेष बचता है उसे परमार्थ प्रयोजन में लगाते रहना चाहिए ताकि संग्रह का अवसर ही न आने पावे। औचित्य इसी में है। अनीति से उपार्जन-लोभवश संग्रह सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति में न लगाकर उसे उत्तराधिकारी के लिए जमा करने के लिए दाव पर रख देना विवेक दृष्टि से हेय ही कहा जा सकता है। खजाने गाढ़ने के पीछे कोई नीति मत्ता नहीं है। इसी प्रकार बिना श्रम उपार्जित संपत्ति के उपयोग की ललक भी नीतियुक्त नहीं है। इससे धन का सिद्धांत और स्वरूप ही विकृत होता है। संभवतः इसीलिए खजाने जमीन में जहाँ-तहाँ गढ़े होने पर भी वे इसीलिए ऊपर उभरने नहीं पाते कि गाढ़ने वालों की तरह उखाड़ने वालों को भी उससे पश्चात्ताप ही उपलब्ध होगा।

❑ ❑

# मुफ्तखोरी सदा अनिष्ट प्रेरणाओं की जननी

हराम का धन पाने और उसके सुखोपभोग की आकांक्षा न तो नैतिक है और न प्रकृति परंपराओं के अनुरूप। इस दिशा में जिसने प्रयास किया उसे निराशा पश्चात्ताप और खीझ के सिवाय और कुछ हाथ नहीं लगा। फलता-फूलता वही धन है, जो परिश्रम और ईमानदारी के साथ कमाया जाए स्थिरता और सत्परिणाम उत्पन्न करने की क्षमता भी उसी में होती है।

सट्टा, जुआ, लाटरी द्वारा कमाई गई आमदनी भी चोरी डकैती की तरह अनैतिक ही है। नियति की इच्छा यह है कि मनुष्य बुद्धि और काया की क्षमता विकसित करे, उनके द्वारा परिपूर्ण श्रम करके जो उपलब्ध हो उस धन से अपनी सुख-शांति का पथ प्रशस्त करे। किंतु कितने ही लोग सरलतापूर्वक झटके की कमाई करके गुलछर्रे उड़ाने की बात सोचते रहते हैं। इसके लिए वे कई बार दुस्साहसपूर्ण कदम भी उठाते हैं। इस प्रयास में अधिकांश को असफल रहना पड़ता है। कभी किसी का दाव लग भी जाए तो देखा गया है कि वह उस सुखोपभोग से सर्वथा वंचित ही रहता है, जिसकी आशा से कुमार्ग पर चलने और कुकर्म करने के लिए कदम बढ़ाया गया था। चोरी-डकैती का उपार्जन और उसकी निरर्थकता को देखते इसी परिणाम पर पहुँचना पड़ता है।

समुद्री डाकेजनी का एक संगठित गिरोह बनाकर कप्तान किडने किसी समय अमेरिका में एक प्रकार का आतंक उत्पन्न कर दिया था। उन दिनों अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का एक मात्र माध्यम जलयान ही थे। किड का गिरोह इस घात में रहता कि सबसे अधिक धन लेकर कौन जहाज किस बंदरगाह पर जा रहा है, जिसमें अधिक जोखिम उठानी पड़े और कम लाभ मिले ऐसे जहाजों पर वह हाथ नहीं डालता था। पर जिसकी लूट से उसे प्रचुर धन की आशा होती उसे हाथ से न जाने देता। उसके गिरोह में न केवल अच्छे गोताखोर तैराक थे वरन् गोलावारी कला में प्रवीण निशाने बाज और आग्नेय अस्त्रज्ञ भी थे। उन्होंने सैकड़ों डाके डाले और उस समुद्री लूट से अरबों की संपत्ति इकट्ठी की।

साथियों को बाँटने के बाद किड के पास प्रचुर संपत्ति बचती थी, उसे यह समुद्र तट के आस-पास जंगलों में हीरे-मोतियों के, सोने-चाँदी के रूप में लोहे के घड़ों और संदूकों में बंद करके गाढ़ देता था। अपने जीवनकाल में उसने प्रचुर संपत्ति लूटी और बक्सों में बंद करके अनेक स्थानों पर गाढ़ी।

यह सब तो होता रहा पर किड उस धन का कुछ उपयोग न कर सका; वह जहाँ का तहाँ जमीन में गढ़ा ही रह गया। किड के साथियों के अनुमान और कथन के अनुसार वह खजाने एक सौ से अधिक स्थानों पर दबे होने चाहिए और उनमें प्रत्येक में करोड़ों की संपत्ति होनी चाहिए। अनुमानों और गवाहियों और आम लोगों के आधार पर इस संपत्ति का अनुमान और स्थान जो समझा जाता है, उसमें से कुछ का विवरण इस प्रकार है—

—लांग आइलैंड साउंड के फिशर्स में ढाई लाख डालर का सोना।

—चालीस लाख डालर का सोना-चाँदी, जवाहरात वेस्ट पाउण्ट के पास हडसैन हाई लेंडस मनीहिल में।

—साठ लाख डालर के सोना, चाँदी, रत्न भंडार कनैक्टीक्ट नदी के ब्रार्क आईलेंड में। स्टोनी बुक ओल्डलाइम बेदर्स फील्ड के आस-पास।

—अस्सी लाख डालर की संपत्ति न्यूजरसी इलाके के केप में पाइंट के आस-पास निंभी तालाब में।

—तीस लाख डालर का सोना चाँदी-बाम्बी हुक आई लैंड तथा केली द्वीप की तिरछी चट्टानों के नीचे।

—रोड आईलैंड पाइरैटस कोब के आस-पास दस लाख डालर का सोना चाँदी।

मैसेचूटस के विलिमगटन डेल्विन डेन क्षेत्र में करोड़ों डालर का रत्न भंडार, चैशायर क्षेत्र में तीन लाख डालर की स्वर्ण मुद्राएँ। टाप पोलिन कोब नौशोन आईलैंड के पूर्वी किनारे पर सत्रह बड़े घड़े सोना। टरनर्स फाल्स और विन्थौपा के इर्द-गिर्द आठ पेटी रत्नराशि।

—न्यू हैंपशायर के एंटरिम क्षेत्र में कुर्देम मर्चेंट जहाज की लूट का सत्तर लाख डालर का माल।

—बूथ व हार्वर के आउटर हेरोन आइलैंड में बीस लाख डालर की सोने की छड़ें।

—शीप्स काट नदी के किनारे वायके सेट इलाके में एक लाख गिन्नियाँ जिसमें से हजारों तो निकाली भी जा चुकीं।

—फार्मलैंड क्षेत्र में एजकाम्ई इलाके में पाँच लाख डालर के जवाहरात।

—ड्रस्डस मिल्स के पास मनीहोल्स में बारह लाख डालर का सोना चाँदी।

—आइल आऊ हार्ट के मनीकोव में पंद्रह लाख डालर की संपदा।

—ओल्ड आरचड के बीच के पास रिछमंड द्वीप में दस लाख डालर की स्वर्ण मुद्राएँ।

—स्टोनी ब्रुक के पास फोर्ड पाइंट कोव में पंद्रह लाख डालर की स्वर्ण संपदा चार घड़ों में।

—पेनोल्स काट क्षेत्र में काडलेड के आस-पास बीस लाख डालर की रत्नराशि।

—कास्कोवे में डियर आइलैंड के आस-पास पैंतीस लाख डालर की सोने की छड़ें।

कुछ लोग स्वयं तो अनैतिक कर्म करके डाकुओं जैसा दुस्साहस नहीं करते पर यह सोचते रहते हैं कि कहीं गढ़ा हुआ खजाना मिल जाए, लाटरी खुल जाए, बाप दादों की कमाई के बल पर गुलछर्रे उड़ाने का अवसर मिल जाए। स्वयं की क्षमता बढ़ाने और पुरुषार्थ में संलग्न होने के झंझट से बचकर समृद्धि की पगडंडियाँ ढूँढ़ते रहने वालों को भी प्रायः असफलता ही मिलती है।

खजाना पाने के लालच में न जाने कितने लोग अपार श्रम करते, पूँजी लगाते और कष्ट उठाते हैं। उतना ही प्रयत्न यदि—उतना ही प्रयास स्वस्थ उत्पादन के लिए किया गया होता तो लागत से कहीं अधिक लाभ मिलता, जबकि हराम की कमाई के लिए लालायित लोग कमाते कुछ नहीं गवाँते ही हैं। निराशा और खीज पल्ले पड़ती है, सो अलग।

एक सात फुट चौड़ा और चार फुट ऊँचा घड़ा बहुमूल्य रत्न राशि और स्वर्ण खंडों से भरा पूरा सबकी जानकारी में है। उसे प्राप्त करने के लिए डेढ़ सौ वर्षों से घोर प्रयत्न किए जा रहे हैं, पर अभी तक यह संभव न हो सका कि उसे निकालकर मानवी अधिकार में लिया जा सके।

अमरीका की मिसीसिपी नदी के किनारे सुंदर क्षेत्र में फैला हुआ होमोचिटो जंगल जितना सघन है उतना ही सुरम्य भी। उस जंगल के एक क्षेत्र पर बसा हुआ एक छोटा गाँव है, नैट चेज। उससे बीस मील आगे एक धनी किसान रीवरडोव का लंबा-चौड़ा कृषि-फार्म है। इस फार्म के उत्तरी भाग में मिसीसिपी नदी का एक दलदली डेल्टा है। वहाँ खड़े होने पर एक चौड़ा बहुत चौड़ा छेद देखा जा सकता है। यह अब तक क्रमशः अधिकाधिक चौड़ा ही होता चला आया है। इसी छेद में दबा पड़ा है उपरोक्त अपार धनराशि से भरा रत्न कुंड। उसे निकालने के अब तक के सारे प्रयत्न बेकार होते चले आए हैं। कहते हैं कि एक प्रेतात्मा उस पर अधिकार जमाए बैठी है और वह उसे निकालने के लिए किए गए हर प्रयत्न को असफल कर देती है।

इस खजाने को प्राप्त करने के लिए रीवर डोव के पूर्वज प्रयत्न करते रहे थे। उन्होंने उस डेल्टा के पास एक मकान भी कृषि व्यवस्था की देखभाल के लिए बनाया था। पर उस क्षेत्र में भूतों का आधिपत्य समझकर डर के मारे उसे छोड़ देना पड़ा। तब से वह ऐसे ही खाली पड़ा है। उसमें रहना तो दूर किसी की हिम्मत उसमें ठहरने की भी नहीं पड़ती।

खजाने को निकालने के प्रयास एक प्रकार से छोड़ ही दिए गए थे, पर रीवर डोव ने हिम्मत करके फिर कमान संभाली और उसने खुद ही अपार धनराशि को प्राप्त करने के लिए आगे कदम बढ़ाया।

पूर्वजों के छोड़े हुए नक्शों के आधार पर उसने डेल्टा के उस देश में प्रवेश किया और अपने साथियों सहित फावड़े चलाए। कीचड़ में पैर बार-बार घुस जाते थे पर खुदाई जारी रखी गई। फावड़ा किसी धातु के बने बर्तन से टकराया और ठन्न की आवाज हुई। कीचड़ हटाकर देखा गया तो एक लोहे का बना विशालकाय घड़ा सामने था। हीरे पन्नों से भरे इस घड़े में अरबों की संपत्ति बताई जाती है। उतनी दौलत सामने रखी देखकर डीव की आँखें चमक उठीं। धातु ढक्कन मजबूती से बंद किया हुआ था उसे खोलना संभव न था अतः यही निश्चय किया कि आस-पास की कीचड़ हटाकर उसे उभारा जाए और प्रयत्नपूर्वक समूचे घड़े को ही बाहर खींच जाए रस्सी से बाँधने के लिए आस-पास की कीचड़ हटाया जाना आवश्यक था। डीव उसी में जुटा।

पर यह क्या जितना ही कीचड़ हटाने का प्रयत्न किया गया, उतना ही घड़ा नीचे घुसता गया। कुछ देर में डीव ने देखा कि न केवल घड़ा

वरन् वह खुद भी कीचड़ में बहुत गहरा घुस चुका है। उसे जान के लाले पड़ गये, और लगातार छः घंटे कीचड़ से लड़कर वह बाहर निकल सकने में सफल हुआ।

कहा जाता है कि किसी जमाने में नेटचेज और न्यूआर्लिएंस के बीच एक पाँच सौ मील लंबी सड़क थी और उस पर अच्छा व्यापार होता था। उसी क्षेत्र में कई डाकू दल भी थे और वे भारी लूट पाट करते थे। इन्हीं डाकुओं में लैफिट, मेसन, हार्प में से किसी का घड़ा है और उन्होंने तब उसे सुरक्षित जगह समझकर वह धनराशि यहाँ गाढ़ी थी। पीछे नदी का पानी रिसता रहा और दलदल बन गया। डाकू पकड़े और मारे गए और वह धन जहाँ का तहाँ गढ़ा रह गया। रीवर ने पूर्वजों के उस वीरान भूमि को खजाने संबंधी प्रकाशित किंवदंती के कारण ही खरीद लिया था।

कितने ही इंजीनियर ठेकेदार तथा दूसरे कुशलकर्मी हर वर्ष दलदल से घड़ा निकालने की योजना लेकर आते रहे, उनका प्रतिशत निकालने वालों को मिलने को लिखित इकरार नामों के आधार पर विशालकाय यंत्रों-बहुसंख्यक श्रमिकों तथा बाँस, बल्ली, रस्से आदि उपकरणों की सहायता में उसे निकालने का सिरतोड़ परिश्रम करते रहने पर हाथ इतना ही लगता है कि घड़ा और गहरा धँस जाता है और खुदाई का छेद पहले की अपेक्षा अधिक चौड़ा हो जाता है। यह गोल्ड हील अमेरिकी बुद्धि कौशल और तकनीक पुरुषार्थ के लिए अभी भी एक चुनौती बना हुआ है।

इस संदर्भ में सबसे बड़ा प्रयत्न सन् १६३६ में हुआ। पंप से पानी निकालने, भारी बुलडोजर से कीचड़ हटाने तथा बगल से रास्ता बनाने के उपाय इंजीनियरों की समिति ने किये लाखों रुपयों की यह योजना बड़े उत्साह के साथ क्रियान्वित की गई। पर सफलता आकाश कुसुम की तरह आगे बढ़ती ही गई। सामने रखा घड़ा निकालने वालों के पुरुषार्थ को चुनौती ही देता रहा और व्यंग ही करता रहा। क्रेन लगाकर जब घड़े की गरदन जकड़ ली गई और निकलने की आशा बँध चली तब अकस्मात् इतनी विकट वर्षा प्रारंभ हो गई कि सारा प्रयत्न गुड़-गोबर हो गया। बुलेक और स्टिक्लोन जैसे ख्याति नाम इंजीनियर सिर पीटते हुए वापिस लौट गए।

इस प्रयास की असफलता का समाचार उस क्षेत्र के आदिवासियों ने बड़े उत्साह के साथ सुना और अपनी बात पर बहुत विश्वास प्रकट

करते हुए कहा कि डाकू मेसन का सिर कटा भूत उस खजाने की रखवाली मुस्तैदी से करता है और वह इतना जबरदस्त है कि कोई प्रयत्न उसके विरुद्ध सफल नहीं हो सकता।

गढ़ा खजाना पाने के पुराने ढर्रे ने अब आधुनिक रूप धारण किया है "लाटरी" के इस गोरखधंधे में लोग बेतरह जेब कटाते हैं। लाटरी में से किसी के हाथ ही कुछ पड़ता होगा। शेष तो खजाना पाने के लालायित की तरह लार टपकाते ही रह जाते हैं। काश, न्याय और श्रम से अर्जित आमदनी से संतुष्ट रहना सीख लिया गया होता तो उस थोड़ी कमाई में भी सुख-शांति की प्रचुर मात्रा हर किसी को सहज ही मिल सकती।

❐ ❐

# भ्रांत धारणाएँ

संपत्तिवान होकर सुखी रहा जाएगा ऐसा आमतौर से सोचा जाता है और इस भ्रांत धारणा के कारण लोग उचित-अनुचित का ध्यान रखे बिना जैसे भी बने वैसे संपत्ति उपार्जन का प्रयत्न करते हैं। प्रयास का परिणाम भी होता है। उद्योगी व्यक्ति धनी बन भी जाते हैं पर उस धन से सुख मिलेगा ही यह पूर्णतया संदिग्ध है। दूसरे लोग धनी को सुखी समझें यह बात अलग है। अनीतिपूर्वक उपार्जन करके उसे छाती के नीचे दबाकर बैठ रहने वाले व्यक्ति वस्तुतः इस धन से दुःख ही अधिक पाते हैं जिससे तृष्णा भी शांत न हो और लोक परलोक में दुःख उठाना पड़े ऐसा कृपण धनवान बनने से क्या लाभ ?

आस्ट्रिया का अंतिम राजा इतना धनी था कि उसे 'न भूतो न भविष्यति' कहा जाता था। ईसा से २२६ वर्ष पूर्व जब वह मरा तो वह अपने महल में ढेरों ऐसी स्वर्ण अट्टालिकाएँ छोड़ गया था, जिनमें प्रत्येक में ४,०४१०२ ग्रेन से अधिक स्वर्ण लगा था, इतिहासकार डेरोडोलर के अनुसार इन अट्टालकिाओं मे केवल स्वर्ण ही ७८,३२५,०००,००० उन दिनों के डालर मूल्य का था। संयुक्त राज्य अमेरिका का समस्त राज्य कोष ४,८००,००,००० डालर का था। अनुमान लगाया जाना चाहिए कि समस्त अमेरिका की तुलना में वह धन २० गुना अधिक था। निनवे नगर का उन दिनों का विशाल वैभव राज्य महल तक ही सीमित रहा। उससे जनता कुछ लाभ न उठा सकी। जैसे ही शासन दुर्बल हुआ कि वह सारा राज्य-वैभव लुटेरों द्वारा लूट लिया गया और वे भवन खंडहर मात्र रह गए।

अल्जीरिया के समुद्री डाकुओं ने भूमध्य सागर से होकर गुजरने वाले जहाजों के लिए भारी आतंक उपस्थित कर रखा था। उनके आक्रमण से शायद ही कोई बच पाता, इस प्रकार उस क्षेत्र का व्यापार एक प्रकार से ठप्प ही पड़ा था। फ्रांसीसी तो उनसे आजिज आ गए थे पर वह कुछ कर नहीं पाते थे। ३०० वर्षों से अधिक समय तक अल्जीरियाई डाकुओं का यह उत्पात पीढ़ी-दर-पीढ़ी ऐसा ही चलता रहा।

निदान ७ नवम्बर १६४२ को अमरीका के नेतृत्व में एक जहाजी बेड़ा इन डाकुओं से निपटने के लिए भेजा गया। फ्रांस भी उनमें शामिल था। निदान डाकुओं पर विजय प्राप्त कर ली और उनसे लूट का धन वापिस लेने का निर्णय किया गया। फ्रांस सरकार ने १८३० से चल रही इस डकैती में फ्रांस को उठानी पड़ी क्षति का लेखा-जोखा तैयार करके बताया कि ५५,६८४, ५२५ स्वर्णिम फ्रेंक मुद्रा की उसे क्षति उठानी पड़ी है।

अल्जीरिया के कोषाध्यक्ष से चाबियों का गुच्छा लिया गया। खजाना खोला गया तो उसमें सोने की ईंटें, हीरे, जवाहरात तथा नोटों का ढेर मिला। गिना गया तो वह ५५,६८४,५२५ की निकली क्षति पूर्ति के लिए माँगे गए धन से ठीक दो फ्रेंक धन अधिक। इस प्रकार फ्रांस ने एक ही दिन में सारी क्षतिपूर्ति कर ली और अल्जीरिया वालों को ६०० वर्ष की उत्पात भरी कमाई क्षण भर में गँवा देनी पड़ी।

❐ ❐

# संचित संपदा या अभिशाप

संचित संपदा जो किसी के काम न आए, किसी की आवश्यकता पूरी न करे और न किसी गिरे को उठाए उसे एक प्रकार का अभिशाप ही समझना चाहिए। संग्रहकर्त्ता की तृष्णा और कृपणता उसे एक प्रकार से दुर्भाग्य का प्रतीक बना देती है, फिर संपत्ति जहाँ भी—जिसके पास भी रहती है उसी को संकट में डालती है।

संसार के बहुमूल्य हीरों के साथ एक विचित्र इतिहास जुड़ा हुआ है वे देर तक किसी के पास नहीं रहा। रुलाकर ही वे प्राप्त किए गए और जब वे गए तब अपनी निशानी रुलाई ही पीछे छोड़ गए।

संसार के प्रसिद्ध कोहेनूर हीरे के पीछे ऐसी ही दर्दनाक कथा जुड़ी हुई है, १८६ कैरेट का यह बहुमूल्य हीरा १४वीं सदी से १८वीं सदी तक भारत में रहा और उसके लोभ में अनेक राजाओं महाराजाओं को अपने सिर कटाने पड़े। नादिरशाह ने इसे अपने 'तख्त ताऊस' में जड़वाया फिर वह ईरान गया, ईरान से फिर वापिस आया। पीछे उसे अँग्रेज ले गए इस बीच इस अभागे हीरे के लिए कितनों को प्राण गँवाने पड़े यह एक रोमांचकारी गाथा है।

रूस की महारानी कैथरीन का एक बहुमूल्य हीरा उसके प्रिय पात्र पोटेमाक्रिन के पास पहुँचा। उसे नेपोलिन ने छीना और अपनी पत्नी यूजीन को विवाहोपहार के रूप में दे दिया। वह बेचारी भी उसे कैथरीन की तरह चैन से न पहन सकी। वह छिना और १८७२ में लंदन के बाजार में उसे नीलाम कर दिया गया।

रूसी राजदूत की तेहरान में हत्या कर दी गई। इस पर आक्रमण करने के लिए रूस से क्षमा-याचना के रूप में ईरान ने 'शाह ऑफ एशिया' नामक ८८।। कैरेट का हीरा भेंट करके तात्कालिक शासक जार का क्रोध ठंडा किया।

इंग्लैंड के राजा हेनरी ऑफ नवारी के वित्तमंत्री डी० सेंसी ने एक कीमती हीरा विश्वासी नौकर के हाथों भेजा डाकुओं से घिर जाने पर उस स्वामिभक्त नौकर ने अपना पैर चीरकर उसमें वह हीरा छिपा लिया। डाकुओं ने उसे लूटकर मार दिया। राजा ने उसकी लाश तलाश कराई

तो उसमें वह हीरा मिल गया। इसके बाद वह 'डार्सेसी' नामक हीरा लुई चौदहवें के पास चला गया और रुलाई की परंपरा साथ लेकर फिर किसी राज परिवार में जा छिपा।

स्टार ऑफ ईस्ट नामक २६ कैरेट का हीरा आर्कडयूक फर्डिनेंड के पास था। उनकी हत्या हो गई। उस हत्या के बहाने १९१४ का प्रथम महायुद्ध छिड़ा और उसने लाखों के प्राण लिए। इसके बाद न जाने वह हीरा कहाँ चला गया ?

१२८ कैरेट के हीरे 'स्टार ऑफ साउथ' के मालिक को मारकर उसके नौकर ने चुरा लिया। नौकर पानी के जहाज से उसे बेचने के लिए किसी दूसरे देश में जा रहा था कि जहाज के कप्तान को पता चल गया और उसने उसे मारकर वह हीरा हथिया लिया। इसे गुप्त रूप से मद्रास के गवर्नर सर टामस पिट ने खरीद लिया। जब वे इंगलैंड वापिस पहुँचे तो मालूम हुआ कि यह रहस्य पहले से ही लोगों को विदित हो चुका है और उसे लूटने के लिए डाकू लोग घात लगाए बैठे हैं। पिट जान बचाने के लिए भाग खड़े हुए और भिखारी का वेश बनाए मुद्दतों उसे छिपाते फिर उन्होंने किसी को बेचकर अपना पिंड छुड़ाया। जिसने खरीदा था वह भी मुसीबत में फँसा और अंततः उसने भी बिना कीमत लिए ही उसे फ्रांस के राजकोष में जमा कर दिया।

अपने आपको आकर्षण का केंद्र बनाने की दृष्टि से लोग अपने में धन की, कला की तथा दूसरी विशेषताएँ उत्पन्न करते हैं और उस विचित्रता के कारण लोगों का ध्यान खींचकर अपने अहंकार की पूर्ति करते हैं। पर ऐसा आकर्षण जिससे किसी का हित साधन न होता हो विपत्ति का कारण बनता है। ललचाई हुई आँखों से जो भी वस्तु देखी जाए उसे उपयोगी भी होना चाहिए। इसके विपरीत यदि वह आकर्षण मात्र बनकर रह गई तो वह संपदा जनता की नजर लगने से भी नष्ट हो जाती है। रूप-सौंदर्य से लेकर निरुपयोगी संपदा का भी हाल यही होता है।

सन् २८६ में जन्मा और ३१२ में मरा चीन का सुप्रसिद्ध रत्न-व्यापारी वी. ची. ह्वान अपने रूप लावण्य के लिए भी उतना ही प्रख्यात था जितना कि अपने व्यापार की प्रमाणिकता के लिए। वह जहाँ भी जाता, दर्शकों की भीड़ लग जाती। कहने वाले कहते—विधाता ने

उसे जिस सांचे में ढाला है, उसमें दूसरा कोई नहीं ढाला। जो देखता सो अपलक ही होकर रह जाता।

चीन के राजा ने उसे आमात्य बनाया पर वहाँ भी वह ठहरा नहीं-उसने नानकिंग जाने की बात सोची और वहीं चला गया। नानकिंग की जनता ने ऐसा देवताओं जैसा सुंदर मनुष्य कभी आँखों से देखा न था, सो उसे देखने के लिए ठट्ठ के ठट्ठ लग गए। इतने लोगों का एक साथ इस प्रकार अभिरुचि के साथ देखना ह्वान के लिए अभिशाप बन गया। वह खड़ा-खड़ा लुढ़क पड़ा और दर्शकों के बीच ही उसकी मृत्यु हो गई।

मनुष्य बड़प्पन के लिए भी प्रयत्न कर सकता है और महानता की दिशा में भी चल सकता है। यह दो मार्ग पृथक-पृथक हैं। प्रतिभा निःसंदेह प्रगति की संभावनाएँ प्रस्तुत करती हैं और सफलताएँ सामने लाकर खड़ी करती है पर महत्त्व उस उपार्जन का नहीं उसके उपयोग का है। यदि सदुपयोग न किया जा सके तो उस उपार्जन को हेय ही ठहराया जाएगा। मनुष्य को निर्णय करना चाहिए कि उसे किस दिशा में चलना है ? लक्ष्य में तनिक-सा अंतर रहने से उसके परिणामों में जमीन-आसमान जैसा अंतर आ जाता है।

स्विटजरलैंड की नोजन नदी अपने मूल उद्गम से निकलकर पोंपापल्स नगरों में दो भागों में विभक्त हो गई है। जमीन के ढलान ने इस विभाजन को दिशा परिवर्तन के रूप में प्रस्तुत कर दिया है। आधी नदी दक्षिण दिशा को चली गई और उसका अंत भूमध्य सागर में हुआ है। शेष आधी उत्तर दिशा में बही है और अंततः उत्तरी सागर में जा मिली है। विभाजन के स्थान पर ढलान का अंतर तनिक-सा है पर दिशा बदल जाने से एक ही नदी का जल सर्वथा भिन्न और एक-दूसरे से अति दूर स्थान पर जा पहुँचा।

जेम्स स्वेन यों स्काटलेंड का निवासी था पर रोजी-रोटी की तलाश में बाहर निकला और मैसाचुसेट्स, वोस्टन आदि में कुछ धंधा-पानी करते हुए अंततः वह १७८७ में फ्रांस जा पहुँचा और वहाँ स्थाई रूप से बस गया। उसने व्यापार में अच्छी सफलता पाई और क्रमशः उन्नति करते हुए बड़ा धनी बन गया।

उस समय फ्रांसीसी सरकार अमेरिका की कर्जदार थी। यों लिया तो २० करोड़ डालर ही गया था पर उसे ब्याज समेत २५ करोड़ डालरों

में चुकाया जाना था। फ्रांसीसी सरकार उन दिनों ऐसी तंगी में थी कि उतना धन सहज ही चुका सकना उसके लिए शक्य न था। जेम्स सोचता रहा जब राष्ट्रीय स्वाभिमान दांव पर लगा हुआ हो तो एक व्यक्ति का धनी बनकर जीना निरर्थक है। उसने अपनी सारी संपदा बेच दी वह इतनी अधिक थी कि उतने से ही अमेरिकन सरकार का सारा कर्ज उतर गया और फ्रांस पूरी तरह ऋण मुक्त हो गया।

स्वेन के अपने गुजारे के लिए कुछ भी न बचा। वह जैसे-तैसे गुजारा करने लगा और पीछे कर्जदार भी हो गया। कर्ज न चुक सकने के अभियोग में उसे लंबी सजा भुगतनी पड़ी। जेल से छूटने पर उसका स्वास्थ्य जर्जर हो गया। छूटने से तीन दिन बाद ही वह असहाय स्थिति में मर गया। पर उसने किसी से भी यह शिकायत नहीं कि मैंने फ्रांस की जनता के लिए इतना किया तो दूसरे लोग मेरी तनिक-सी सहायता करने भी आगे नहीं आते। उसकी मृत्यु के बाद लोगों को उसका ध्यान आया और वह मरकर भी अमर हो गया।

उदार मनुष्य भले ही धन, विद्या, बल, वैभव कुछ भी उपार्जित करें पर उनका लक्ष्य यही रहता है कि इसे लोकमंगल के लिए खर्च किया जाए, ऐसे ही मनुष्य धरती के देवता कहलाते हैं और युग-युगांतरों तक सराहे जाते हैं।

मनुष्य द्वारा संग्रहीत और छिपाए हुए खजानों की अपेक्षा प्रकृति के गर्भ में स्वाभाविक खजाना भी करोड़ों गुनी मात्रा में दबा पड़ा है। अन्न के वनस्पतियों के तथा विविध खनिज पदार्थों के रूप में हम उसे आदिकाल से प्राप्त कर रहे हैं और अंतःकाल तक प्राप्त करते रहेंगे। पुरुषार्थी और अध्यवसायी इसे पहले भी प्राप्त करते रहे हैं और अब भी प्राप्त कर रहे हैं। प्रकृति का यह द्वार हर किसी के लिए खुला पड़ा है, वह मुक्तहस्त से सबको अपना भंडार लुटा रही है। बिना ईर्ष्या और लालच उत्पन्न किए इसे प्रत्येक पराक्रमी सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकता है। अथक श्रम और सघन मनोयोग के उपकरण लेकर जहाँ भी खोदना आरंभ किया जाएगा वहीं से सफलताओं की रत्नराशि उपलब्ध होने लगेगी।

मनुष्य का अपना व्यक्तित्व भी किसी बड़े रत्न भंडार से कम नहीं है। उसमें इच्छाशक्ति, बुद्धिशक्ति और क्रियाशक्ति के रूप में वे तिजोरियाँ भरी पड़ी हैं, जिसकी तुलना संसार की समस्त संपदाओं के सम्मिलित

रूप से भी नहीं की जा सकती। 'पराई पत्तल का भात मीठा और घर की खीर बेतुकी' लगने की बुरी आदत ही हमें दूसरों के कमाए छिपाए खजाने पाने के लिए ललचाती है, जबकि उनसे कहीं अधिक बहुमूल्य राशि अपने में ही दबी हुई सड़ रही है।

मुफ्त का धन जिन्होंने भी पाया उन्हें दूसरों की ईर्ष्या का भाजन तथा आक्रमण का शिकार होना पड़ा है। उसने अपने पीछे बुरी प्रेरणा और परंपरा छोड़ी है। हम भी यदि उसी मार्ग पर चलें तो उन्हीं दुःखद परिणामों की पुनरावृत्ति होगी, जो अब तक होती रही है। खजाना पाने का मन हो तो उसे व्यक्तित्व के श्रेष्ठ उपयोग के उपाय द्वारा ही ढूँढ़ने और पाने का निश्चय करना चाहिए। इस मार्ग पर चलते हुए इतनी बड़ी-बड़ी सफलताएँ मिल सकती हैं, जिसकी खजाना ढूँढ़ने वाले कल्पना भी नहीं कर सकते।

❐ ❐

# धन-समृद्धि के लिए सही कदम उठाएँ

बहुसंख्यक वर्ग गरीबी का जीवन व्यतीत करता है। रोजगार की आवश्यकताएँ आसानी से जिनकी पूरी हो जाती हों, जिन्हें इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चिंतित न होना पड़ता हो ऐसे लोग बहुत कम होंगे, उनकी तुलना में जिन्हें कि अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है और रात को आने वाले कल की चिंता लेकर सोना पड़ता है। निर्धनता अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए भी चिंतित और सशंकित रखने वाली परिस्थिति का नाम है और यह स्थिति जितने व्यापक रूप में लोगों को परेशान करती है उतनी शायद ही और कोई दूसरी परिस्थिति परेशान करती होगी।

इस परिस्थिति से सभी कोई स्वयं को उबारना चाहते हैं। गरीबी को सुविधापूर्वक सुधारने वाले लोग ढूँढे से भी नहीं मिलेंगे। निर्धनता के निवारण हेतु भी लोग अपने ढंग से प्रयास करते हैं। परंतु उन्हें सफलता कम ही मिलती है। यही कारण है कि निर्धनता संसार की सर्वाधिक व्यापक और त्रासदायी समस्या है। जो भी इस रोग के शिकार हैं उनकी तीव्र आकांक्षा होती है कि इससे छुटकारा पाएँ। आकांक्षा को पूरी करने के प्रयत्न भी चलते हैं परंतु उनमें सफलता मिल ही जाए यह कोई निश्चित नहीं रहता।

इसके कई कारण हैं। पहला तो यह कि अधिकांश लोग पूरे प्राण में नहीं चाहते कि उनकी गरीबी मिट जाए। उन्हें केवल इतनी भर चाह तो होती है कि दो जून खाना, तन ढकने को कपड़े और सिर ढकने को छाया भर मिल जाए। इतना मात्र काफी है। संपन्नता हमें नहीं चाहिए। वस्तुतः इस आकाँक्षा के पीछे बहुत कुछ तो आलस्य और सुविधा प्राप्ति की लालसा रहती है। ऐसे लोगों का दृष्टिकोण यह रहता है कि यदि भोजन, वस्त्र और आवास की हमारी आवश्यकता पूरी होती रहे तो हम आराम से रहें और मौज करें। गरीबी उनके लिए इतनी दुःखदायी नहीं होती जितना कि परिश्रम। आराम से, बिना श्रम किए बैठे-बैठे खाने की इच्छा रखने वाले लोग अधिक हैं अपेक्षाकृत गरीबी को संपन्नता में

बदलने की कामना रखने वालों के। इसलिए दिनभर मेहनत करने वाले कई लोग शाम को अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा सट्टे के नंबर पर लगाते मिल जाएँगे। बहुत-से जुआ लाटरी खेल डालेंगे। रिक्शा ताँगा चलाने वाले मजदूर जो स्वयं को गरीबी का सबसे ज्यादा शिकार बताते हैं दिनभर में दस-पंद्रह रुपये रोज कमाते हैं।

रिक्शा ताँगा चलाने वालों में भी मितव्ययी और मास्टर, क्लर्कों में भी दुष्प्रवृत्तिग्रस्त लोग होते हैं। पर उदाहरण के रूप में इस तरह यह तो माना ही जा सकता है कि उपार्जित कमाई में ही संतोषपूर्वक गुजारा करते हुए कम से कम निर्धनता के त्रास से तात्कालिक मुक्ति तो पाई जा सकती है। पर कहा जा चुका है कि अधिकाँश लोगों के लिए निर्धनता को भगाने की समस्या मात्र इसलिए है कि सुविधापूर्वक जीवन व्यतीत किया जा सके। ऐसी मनोभूमि से संपन्नता सौ कोस दूर रहे तो यह अस्वाभाविक नहीं है।

प्रख्यात विचारक स्वेट मार्डन ने गरीबी से मुक्ति पाने के लिए तीन साधन प्रमुख रूप से बताए हैं—मन से गरीबी को भगाकर पूरे प्राण से समृद्धि को पुकारना, कठोर श्रम और उपार्जन तथा व्यय का संतुलन। ये तीन उपाय ऐसे हैं जिन्हें उपयोग में लाकर समृद्धि का स्वागत किया जा सकता है, उसे निमंत्रण दिया जा सकता है कई लोग यह समझते हैं कि गरीबी ईश्वर की देन है और भगवान हमें निर्धन ही रखना चाहता है। सिद्धांततः तो ऐसा नहीं है क्योंकि भगवान ने मनुष्य को अपनी सर्वोत्तम कृति के रूप में सृजा है। वह किसी भी स्थिति में नहीं चाहेगा कि उसका पुत्र रोटी और कपड़े के पीछे ही अपना अमूल्य जीवन बर्बाद कर दे। जीवित रहने के साधन जुटाने में ही उसका जीवन चक्र पूरा हो जाए। लौकिक, पिता भी जब अपनी संतान को दीन-हीन निर्धन बने रहने देना नहीं चाहता तो अलौकिक और सांसारिक पिता से सभी बातों में श्रेष्ठ परमपिता अपनी संतान को दीन-हीन देखना क्यों पसंद करेगा ?

गरीबी को ईश्वर की इच्छा मानना मन की एक भ्रामक कल्पना है, जो वह आलस्य या प्रमाद के कारण श्रम से बचने के लिए करता है। मन की प्रवृत्ति श्रम से बचने के लिए नहीं है पर आलस्य और प्रमाद ही उसे इस तरह भ्रमित करते रहते हैं तो मन को पहले यह अनुभव करना आवश्यक है कि हम दीन-हीन अकिंचन बने रहने के लिए ही पैदा नहीं हुए हैं। सब ऐश्वर्यों के स्वामी परमपिता की संतान मनुष्य दरिद्रता के लिए

नहीं जन्मी है। उसे समृद्ध होना चाहिए बल्कि यह भी आभास करना चाहिए कि समृद्धि हमें अपने पिता से उत्तराधिकार में मिली है और हम दीन-हीन नहीं रह सकते।

यह एक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि अपने संबंध में हमारी जैसी धारणाएँ होंगी वैसे ही हम बनते जाएँगे। हमारी प्रवृत्तियाँ क्रियाएँ और प्रयास जब उसी दिशा में अग्रसर होंगे जिसे हम अपना स्वरूप समझते हैं। मानवीय अस्तित्व के लिए मन एक कल्पवृक्ष की तरह है। जिसकी छाया में जो इच्छा की जाएगी वही पूरी होगी। हम सोचते रहें कि हम गरीब हैं, निर्धन हैं और निर्धन ही जन्मे हैं तथा दरिद्र ही बने रहेंगे तो आकाश के तारे हाथ में आना भले ही संभव हो जाएँ पर यह कदापि संभव नहीं होगा कि समृद्धि की हवा भी हमें लग जाए।

मन को गरीबी से मुक्त करने और पूरे प्राणों से समृद्धि को पुकारने की कसौटी क्या है ? बहुत-से लक्षण विपरीत होने पर भी हम यथास्थिति को अनुभव नहीं कर पाते। जैसा कि आरंभ में कहा जा चुका है कि बहुत-से लोग गरीबी से मुक्त होना नहीं चाहते बल्कि गरीबी को दोष देने की आदत के पीछे उनकी श्रम से बचने की, आराम से गुजारा करने की कामना रहती है। मन गरीबी से मुक्त है या नहीं, प्राणों में समृद्धि की पुकार है या नहीं—इसका पता इस बात से लगाया जा सकता है कि मुक्ति और पुकार के लिए हमारे प्रयास कैसे चल रहे हैं ? उदाहरण के लिए कोई कमजोर विद्यार्थी परीक्षा पास करने का संकल्प सच्चे हृदय से करता है तो वह विद्याभ्यास के लिए भी अपेक्षित, प्रयास करेगा। बीमार आदमी स्वास्थ्य की कामना करता रहता है तो वह स्वस्थ होने के लिए उपचारादि से लेकर अपनी आदतों तक में परिवर्तन कर लेगा हम कहीं पहुँचने का संकल्प करते हैं तो संकल्प उठने के साथ ही यात्रा की तैयारी में भी व्यस्त हो जाएँगे। मन को समृद्ध बना लिया है, यह प्रमाणित करने के लिए किसी प्रकार का दावा करने की आवश्यकता नहीं है वरन् चित्त का संकल्प प्रयासों की प्रखरता में स्वयं ही व्यक्त होता जाएगा। किसी प्रख्यात विचारक ने लिखा है—परिस्थिति का विवेचन करने से पता चलता है कि निर्धनता व्यक्ति की अपनी निष्क्रियता से उत्पन्न होती है। कई लोग कहते हैं कि वे निर्धन परिवारों में पैदा हुए थे। परंतु वे लोग यह नहीं सोचते कि पैदा तो बिना पढ़े-लिखे भी हुए थे, फिर उन्होंने भाषा की क्षमता कैसे प्राप्त करली ? विरासत में मिली निर्धनता व्यक्ति को साधनहीन भले ही बना दे परंतु लूला-लंगड़ा नहीं बना सकती। संकल्पवान, महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति अपनी पारिवारिक निर्धनता से प्रेरणा लेकर ही आगे बढ़ते हैं।

शत-प्रतिशत दृढ़ता के साथ यह कहा जा सकता है कि जिसने अपने मन को समृद्ध बनने के लिए संकल्पशील बना लिया वह समृद्धि के लिए निश्चित रूप से सक्रिय होगा ही तन को गरीबी से मुक्त करना, पूरे प्राण से समृद्धि को पुकारना तथा इसे प्राप्त करने के लिए सक्रिय होने के साथ समृद्धि का तीसरा कदम है उपार्जन और नियोजन का संतुलन।

कई लोगों की आवश्यकताएँ अथवा व्यय कै मद इस प्रकार बढ़े हुए होते हैं कि उन्हें अपनी कमाई का अधिकांश भाग ही नहीं उससे ज्यादा भी खर्च कर देना पड़ता है। वह अधिक या तो कर्ज लेकर खर्च किया जा सकता है अथवा उसका खर्च निकालने के लिए व्यक्ति को अनैतिक उपायों का सहारा लेना पड़ता है। अनैतिक तरीकों को अपनाकर आज तक कोई भी व्यक्ति समृद्ध नहीं हुआ है जो लोग अनैतिकता से संपन्न बने हैं, उनकी संपन्नता का भवन ताश के पत्तों के महल की तरह होता है, जो जरा-सी हवा में भी भरभरा कर गिर जाता है।

समृद्धि का एक स्वर्ण नियम है कि आमदनी से कम खर्च किया जाए। जितना कुछ कमाया जाए उसमें से कुछ भाग संकट काल के लिए या अन्य समय के लिए बचाकर रखा जाए। बंधे बँधाये ढर्रे के प्रयास कभी निश्चित आय से अधिक उपार्जन नहीं कर पाते। उसके लिए सदैव नए कदम उठाने होते हैं अतः उचित यही है कि उन नए कदमों को उठाने के साथ जब परिस्थितियाँ बदलें' और कदाचित उनका रुख प्रतिकूल हो जाए तो उस समय के लिए सुरक्षा प्रबंध करके रखे जाए।

जो भी हो' आमदनी से कम खर्च करना हर प्रकार से लाभदायक है उसका अर्थ कंजूसी भी नहीं है। समझपूर्वक अपने समय, धन और शक्तियों का उपयोगी कार्यों में नियोजन ही समृद्धि का मूल है। अपव्ययी स्वभाव बनाए रखने का अर्थ है—घर फूँककर तमाशा देखना। व्यसनों, व्यर्थ के कामों, विलासिता और मौज-मस्ती में डूबे रहने वाले क्रियाकलाप अपनाने वाला व्यक्ति कोई और भले ही हो सकता है पर संपन्नता की मंजिल का यात्री नहीं हो सकता क्योंकि जिसे अपनी शक्तियों का ही सही मूल्य नहीं 'मालूम जो उनका आदर करना नहीं जानता, जिसे साधनों का उपयोग करना ही नहीं आता उसके संपन्न होने की आशा किस आधार पर की जा सकती है ? संयोगवश कदाचित उसे संपन्नता मिल भी जाए तो वह उसे किस प्रकार सहेजकर रख सकता है ?

फिजूलखर्ची को निर्धनता की जननी कहा जा सकता है। अपनी आवश्यकताओं को आय तक ही सीमित रखकर, जहाँ तक हो सके उसे कम ही रखते हुए कोई भी व्यक्ति बिना अतिरिक्त प्रयास किए समृद्धि की मंजिल तय कर सकता है। संसार में आज इतना दुख, क्षोभ, विषमता और समस्याएँ हैं, जिन्हें लेकर अक्सर लोग बड़ी चिंता प्रकट किया करते हैं। साधारण मनोभूमि का व्यक्ति यदि उन चिंताओं को ढोता रहे तो बहुत संभव है कि वह अपना दैनिक जीवन भी ठीक प्रकार से न चला पाए क्योंकि न केवल धन ही वरन् उसकी अन्य शक्तियाँ विभिन्न द्वारों से व्यर्थ ही नष्ट होती रहती है और चुकती जाती है। उन्हें सहेजकर ही मनस्वीजन प्रयत्न किया करते हैं और उनके प्रयत्नों का ही परिणाम है कि मानवी सभ्यता उन समस्याओं के बावजूद भी निरंतर प्रगति करती जा रही है।

मन को निराशावादी विचारों और भावनाओं से मुक्त कर सच्चे मन से यदि संपन्नता के लिए कोई प्रयास किया जाए तो उसकी असफलता का कोई आधार ही नहीं रह जाता।

❐ ❐

# इतने पाँव पसारिये, जितनी चादर होय

एक विद्वान का मत है—आवश्यकता आविष्कार की जननी है। आज दुनियाँ में बहुत-सी वस्तुएँ जो हमें उपलब्ध हैं, चाहे वे भौतिक हों अथवा आध्यात्मिक—वे सबकी सब हमारी आवश्यकताओं की देन हैं। हमारी आवश्यकता ही तो वह अलादीन का चिराग है जिसने इतने सारे संशोधनों को हमारी सेवा में प्रस्तुत कर दिया है। परंतु हमें अर्थशास्त्र के नियम सिद्धांतों को एक दम से भुला नहीं देना चाहिए। आवश्यकताएँ असीमित हैं और इनके पूर्ति के साधन सीमित हैं। इन सीमित साधनों से असीमित आवश्यकताओं की तृप्ति संभव नहीं है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को बढ़ा लें अथवा साधनों का गलत उपयोग करने लग जाएँ तो अपनी अनेकों परेशानियों के कारण स्वयं बन जाएँगे। इतना ही

नहीं, कभी तो ये परेशानियाँ समाज और देश के लिए भी घातक सिद्ध होती हैं।

आज समाज में यत्र-तत्र सर्वत्र यह रोना-धोना सुना और देखा जा सकता है कि इस महँगाई रूपी "सुरसा" ने परिवार की सारी आमदनी निगल जाने का फैसला कर लिया है। परिवार की अच्छी खासी आमदनी के बावजूद इस कमरतोड़ महँगाई के कारण गुजर-बसर करना संभव नहीं हो पाता। फलतः मानव मन अशांत एवं क्लांत रहता है। यह हाल उन लोगों का है जिनकी आमदनी अच्छी है, फिर कम आमदनी वालों का महँगाई के मारे क्या हाल होना चाहिए—इस बात की कल्पना अच्छी तरह की जा सकती है।

अधिकतर जो लोग अनावश्यक एवं फिजूलखर्ची के आदी होते हैं, वे लोग अच्छी आमदनी के बावजूद भी अपना खर्च चलाने में असमर्थ रहते हैं। वे इच्छाओं के वशीभूत होकर हर वस्तु को एकत्रित करने का प्रयास करते हैं, ऐसा करने वाले बहुधा वे लोग ही होते हैं जो कि इच्छाओं और आवश्यकताओं के अंतर को समझाते नहीं हैं। इच्छाओं और आवश्यकताओं में बहुत अंतर है। आवश्यकताओं के भी भेद होते हैं जिनमें अनिवार्य आवश्यकताएँ अधिक महत्त्वपूर्ण होती हैं। एक व्यक्ति के लिए रोटी, कपड़ा और मकान पहली आवश्यकता है तात्पर्य यह है कि आवश्यकताएँ यदि उचित क्रम में हों तो कभी न कभी पूरी हो भी सकती हैं, परंतु इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है, मनुष्य उन्हें कभी भी पूरा नहीं कर सकता।

प्रायः यह देखा गया है कि लोग अपनी आवश्यकता को ध्यान में रखे बगैर ज्यादा वस्तुएँ क्रय करने के चक्कर में मुसीबतें मोल लेते रहते हैं। बेचारे को यह पता ही नहीं रहता कि बिना भूख के खाया गया भोजन तुष्टि नहीं अनिष्ट ही करेगा। पेट खराब ही होकर रहेगा और परिणाम यह होगा कि शरीर के सारे क्रिया-कलाप अस्त-व्यस्त हो जाएँगे। यही स्थिति कबाड़ी की तरह वस्तुएँ खरीदकर एकत्रित करने वाले की होती है। वह अनाप-शनाप वस्तुओं का ढेर लगा लेता है जो कि पड़े-पड़े बरबाद होती है तथा खरीददार को कोसती है।

अधिकांश लोग अपनी जरूरतों की ओर ध्यान दिए बगैर नीलाम आदि में सस्ते माल के चक्कर में बहुत-सी वस्तुएँ खरीद लिया करते हैं। खरीदी जाने वाली वस्तु की उनके लिए क्या और कितनी

उपयोगिता है ? इस पर विचार करने की आवश्यकता ही नहीं समझते। इस प्रकार वे लोग एक तरफ तो अपने धन की बर्बादी करते हैं जो कि पारिवारिक बजट को कमजोर कर देती है तो दूसरी ओर वे अनावश्यक चीजें भी घर में पड़ी-पड़ी खराब होने के अतिरिक्त घर को कवाड़खाना बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

आज के इस भौतिकवादी युग में यह सस्ते का चक्कर भी बिना जरूरत की वस्तुएँ खरीदने में बहुत बड़ा रोल अदा करता है। हमारे पड़ौस में एक भाई साहब किराए के मकान में रहते हैं, उन्होंने अपना निजी मकान बनाने के उद्देश्य से एक जमीन खरीदी। फिर मकान बनाने के लिए पैसों के जुगाड़ में लगे रहे। इसी बीच उन्हें पता चला कि एक और जमीन सस्ते में बिक रही है। बस फिर क्या था, उन सज्जन ने बिना आवश्यकता के उस जमीन को भी खरीद डाला। अब भला आप ही सोचिये, इस खरीद में क्या तुक था ? जबकि उनके पास पहले ही जमीन उपलब्ध थी। अब देखिये साहब उनके पास दो-दो जमीन होते हुए भी किराए के मकान में पड़े हुए हैं। यह कहाँ की बुद्धिमत्ता है ? ऐसे अकल के दुश्मन लोगों को भला क्या कहा जाए ?

आए दिन हमें अनेकों ऐसे खब्ती लोगों से पाला पड़ता ही रहता है, जिन्हें अनावश्यक खरीद-फरोख्त का शौक होता है। आजकल साधारण लोगों के घरों में कई जोड़े मोजे, जूते, टाइयाँ, दर्जनों कपड़े रखे जाते हैं। इतना ही नहीं अब तो पिछले दो-तीन वर्षों से लोग अनाज भी आवश्यकता से अधिक खरीदकर रखने लगे हैं। मनुष्य जितनी भी वस्तुएँ खरीदकर रख लेता है, वे सबकी सब एक साथ तो काम में आती नहीं। परिणामस्वरूप पड़ी-पड़ी खराब होती हैं। उनके रखरखाव पर जो परिश्रम और आर्थिक व्यय करना पड़ता है सो अलग। अतएव हमें अपनी आवश्यकता के अनुसार ही चीजें रखनी चाहिए।

अगर हम सुखी जीवन की आकांक्षा रखते हैं तो जितना चादर उतना ही पैर फैलाने वाली बात को अपने ऊपर चरितार्थ करना होगा और बिना जरूरत चीजों को खरीदकर घर को गोदाम बनाने की बुरी आदत से छुटकारा पाना होगा।

यहाँ पर यह बताना अनुपयुक्त एवं असामयिक नहीं होगा कि आवश्यकताएँ हनुमान की पूँछ की तरह बढ़ती ही जाती हैं। एक के बाद दूसरी फिर तीसरी और फिर यह क्रम जारी रहता है। इसलिए जरूरतों

को कम करना भी सुखी जीवन जीने का गुरु मंत्र है। अर्वाचीन अर्थशास्त्रियों में डॉ० मेहता नामक अर्थशास्त्री हुए हैं। डॉ० मेहता ने अपने अर्थशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। मोटे रूप में उन्होंने अपने सिद्धांत में यही बतलाया हैं कि हमें आवश्यकताविहीन हो जाना चाहिए फिर संसार में कोई आर्थिक समस्या नहीं रहेगी।

डॉ० मेहता द्वारा प्रतिपादित उपरोक्त सिद्धांत केवल सिद्धांत हो सकता है। संसार में शायद ही ऐसा कोई अपवाद स्वरूप व्यक्ति हो जो अपनी आवश्यकता को समाप्त करके पूर्ण संतुष्ट बन सके। अतएव हमें अपने व्यक्हारिक जीवन में अर्थशास्त्र के सामान्य नियमों को ध्यान में रखकर अपनी आवश्यकताओं का चुनाव और क्रमानुसार पूर्ति करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए सबसे पहले ध्यान देने योग्य बात यह है कि व्यवहारिक बजट तैयार कर लेना चाहिए, जिसमें अनिवार्य आवश्यकताओं को प्राथमिकता के क्रम में रखना चाहिए। जैसे मनुष्य के लिए भोजन पहली आवश्यकता है, फिर कपड़ा, मकान, दवाई, शिक्षा इत्यादि अतएव पारिवारिक बजट में भोजन पर किए जाने वाले व्यय को सर्वप्रथम प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

वर्तमान युग में पैसे का बड़ा महत्त्व बढ़ता जा रहा है और उसकी क्रयशक्ति घटती जा रही है। ऐसी स्थिति में कुछ पैसा सदैव अपनी गाँठ में बाँधकर रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है, क्योंकि यह आपका सच्चा मित्र है, जो आपकी प्रत्येक आवश्यकता को तत्काल हल करने में समर्थ है।

हमें सुखी जीवन जीने के लिए आवश्यकताओं के चुनाव पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इसके लिए अर्थशास्त्र के सामान्य नियमों का थोड़ा-सा ज्ञान भी आवश्यक है। अतएव अपनी भावी आवश्यकताओं का चयन एवं पूर्ति के लिए उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर सुख एवं संतोष प्राप्त करें।

❐ ❐

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा